मासिक

श्री स्वामिनारायण

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महीने की ११ तारीख ● पूर्ण अंक २१६ अंक ● जुलाई-२०२५
Volume no. 18, Issue No. 216 July 2025

केसर स्नान

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१. Publisher: Shree Swaminarayan Temple, Ahmedabad- 380001 Rs.5/-

अपने ह्यूस्टन (अमेरिका) मंदिर के २५ वे पाटोत्सव के अवसर पर ठाकुरजी का अभिषेक करते और सभा में सभी को आशीर्वाद देते प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री ।

टोरेन्टो (आई.एस.एस.ओ. कै नेडा) के नूतन शिखरबद्ध मंदिर का शिलान्यास करते प.पू. आचार्य महाराजश्री ।

एडमिन्टन (आई.एस.एस.ओ. कैनेडा) मंदिर के १० वे पाटोत्सव के अवसर पर ठाकुरजी की अन्नकूट आरती उतारते प.पू. आचार्य महाराजश्री ।

वानकुंवर (कैनेडा में) कथा-वार्ता का लाभ लेते हरिभक्त ।

रजाईना (कैनेडा) मंदिर के पाटोत्सव के अवसर पर अन्नकूट दर्शन ।

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - १९ ● अंक : २१८ ● सितम्बर-२०२५

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०४
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०५
०३.	''समैयो'' के उपलक्ष्य में शिक्षापत्री	०६
०४.	श्रीहरि के ६ठे और ७वे वंशज के मुख से अमृतवचनो	०७
०५.	समैयो के उपलक्ष में २१२ गाँवो की २१२ कलाक की अखंड महामंत्र धून	१२
०६.	श्री स्वामिनारायण म्युजियम के द्वार से	२५
०७.	भक्ति सुधा	२६
०८.	''समैयो'' के उपलक्ष्य में	२९
०९.	सत्संग समाचार	३३

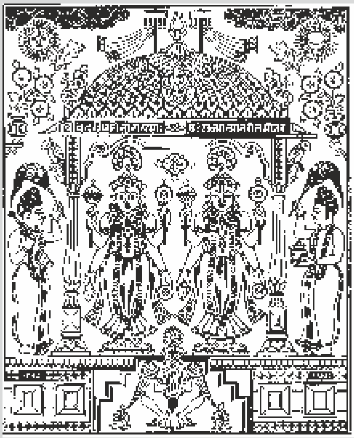

संस्थापक

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७, २७४१९५९७
www.swaminarayanmuseum.com

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी
(महंत स्वामी)
मो. ९३१३७१९२३२

पत्र व्यवहार

श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
मो. ९३१३७०६०९५
magazine@swaminarayan.in
www.swaminarayan.info
पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail :
magazine@swaminarayan.in

मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● प्रति कोपी ५-००

अस्मदीयम्

प्रिय भक्तो,

हम सभी को ऐसा शुभ अच्छा देश, समय, क्रिया और साथ का योग प्राप्त हुआ है। हम सभी को अहमदाबाद देश में जन्म तथा रहने का अवसर प्राप्त हुआ है।

भगवान के अपने करकमलो द्वारा श्री नरनारायणदेव की स्थापना का दर्शन होता है। उन्ही के सामने सभा मंडप में अखंड २१२ घंटे की स्वामिनारायण महामंत्र की धुन का लाभ मिलता है। तथा शिक्षापत्री के द्विशताब्दी के ''समैया'' का लाभ मिलेगा। हम सब कितने भाग्यशाली है।

हमलोगो को कई बार ऐसा लगता है कि सत्संग में अपने धर्म में जैसा चाहिए। ऐसी दृढता क्यो नही रहती है ?

महाराजने हम लोगो को कहे है परमेश्वर के वचन में चिंता नही इस लिये ऐसा होता है। जो वचन (शिक्षापत्री-वचनामृत) में ध्यान नही रहे तो सामान्य अवस्था में भी धर्मच्युत हो सकते है।

इस लिये महाराज के वचन पालन में पूरा ध्यान देना चाहिए। यदि महाराज के प्रति दृढ निष्ठा होगी तो वचन और पूर्ण होगा। भगवान की महिमा को यर्थात रुप में जानना चाहिए।

भगवान को खुश करने पर ध्यान दे। भगवान के भक्त को अभिमान नही करना चाहिए। निर्मानी भक्त सबसे श्रेष्ठ होता है।

स्वयं के घर पर प्रसंग होने वाला हो। उनकी तैयारी के लिये दिन-रात विचार चलता रहता है। इसी प्रकार इस ''समैया'' के बारे में अपना मानकर, उसकी तैयारी के लिये आकर पूछे कि स्वामीजी इस अवसर पर क्या कर सकता हूँ। हम सभी तैयारी में साथ है। इसका आनंद मिलेगा। तथा राहत भी मिलेगी।

हम सभी लोग मिलकर इस अवसर को मनायेगे। जो शिक्षापत्री की आज्ञा है। यही हमारा जीवन है। शिक्षापत्री के अनुसार कार्य करे। उसे भगवान अपना कहे है। तो इस लोक तथा परलोक में सुखी रहेगे। ऐसा भगवानने वचन दिया है। तो हमे महासुखी होना है न ? तो शिक्षापत्री का पालन तथा उसकी चिंता करे।

अभी २१२ घंटे की अखंड धुन का परदा पडा है। हमें हमेशा याद रखना है कि २१२ गाँव के स्थान पर पूरा अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव देश आया था। भविष्य का कार्यक्रम प.पू. महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री के आज्ञानुसार होगा। समैया के अवसर पर धार्मिक-सामाजिक क्रिया-कलाप भी करना है। मंत्र लेखन धुन, शिक्षापत्री पाठ, वृक्षारोपण, स्वच्छता अभियान आदि अपने आयोजन है। उसे प्रत्येक हरिभक्त अपनी स्वयं की प्रवृत्ति समझकर करे। अपना लक्ष्य मात्र ''समैया'' और उसके उपलक्ष्य में आयोजित क्रिया-कलाप पर ध्यान रखना है।

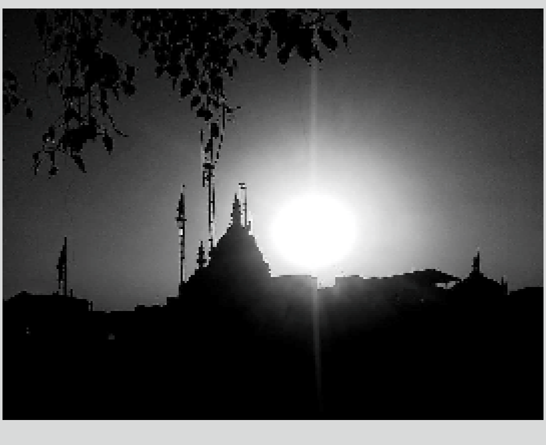

संपादकश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी पुरुषोतमप्रकाशदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कार्यक्रम की

रुपरेखा

(अगस्त-२०२५)

५ एकादशी के दिन श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर संत महादीक्षा अपने करकमलो द्वारा पूर्ण किये ।

९ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर पूर्णिमा को सत्संग सभा में पधारना ''समैया'' के उपलक्ष में नीम के पौधे का वितरण करना ।

१२से१३ श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणसरोवर कच्छ (कोटेश्वर) नूतन मंदिर मूर्ति प्रतिष्ठा और विराम स्थल के उद्‌घाटन के अवसर पर पधारना ।

१५ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर ''समैयो'' के उपलक्ष में श्री नरनारायणदेव देश के २१२ गाँवो की २१२ घंटे को श्री स्वामिनारायण महामंत्र अखंड धून का उद्‌घाटन आरती करके प्रारंभ किये ।

१६ श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर में अखंड धून पर पधारना ।

२०से३१ श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनीया (आई.एस.एस.ओ.) अमेरिका पाटोत्सव के अवसर पर और श्री स्वामिनारायण मंदिर सिनसीनाटी (आई.एस.एस.ओ. अमेरिका) में मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा के लिये पधारना ।

प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(अगस्त-२०२५)

९ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर पूनम के सत्संग सभा में पधारना ।

१२से१३ श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणसरोवर कच्छ (कोटेश्वर) नूतन मंदिर मूर्ति प्रतिष्ठा और विराम स्थल के उद्‌घाटन पर पधारना ।

१५ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर ''समैयो'' के अवसर पर श्री नरनारायणदेव देश के २१२ गाँवो की २१२ घंटे को श्री स्वामिनारायण महामंत्र अखंड धून के अवसर पर पधारना ।

२० थी ३१ श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनीया (आई.एस.एस.ओ.) अमेरिका पाटोत्सव के अवसर पर श्री स्वामिनारायण मंदिर सिनसीनाटी (आई.एस.एस.ओ. अमेरिका) मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा प्रसंगे पधरामणी ।

श्री स्वामिनारायण

समैयो के उपलक्ष्य में ॥ शिक्षापत्री ॥

एकात्म्यमेव विज्ञेयं नारायणमहेशयोः ।
उमयोर्ब्रह्मरूपेण वेदेषु प्रतिपादनात् ॥४७॥

अनुवाद : नारायण और शिवजी दोनो को एकात्मक ही समझे, क्योकि वेद भी इन दोनो को ब्रह्मरुप मानकर व्यारव्या दिये है ॥४७॥

ब्रह्मा, विष्णु और महेश इन तीनो देवताओ में से कोई विष्णु का तो कोई शिव का स्मरण करते है । इस प्रकार अपने देव के प्रति गुरुता आ जाती है । यह करना अच्छी बात नहीं है । इस लिये इस श्लोक में बताया गया है कि विष्णु और शिव एक ही स्वरुप है । इनमें एक तत्व का दर्शन करना चाहिए । सात्विक गुण के अधिष्ठापर श्रीविष्णुजी है । इस लिये सात्विक लोगो को उनके रुप का महत्व देना चाहिए । यह भी सत्य है।

प्रायः भारत में अनेक देव पूजा **polytheism** प्राचीन काल से चली आ रही है । अनेक देवो की पूजा होने के कारण स्वभावतः श्रेष्ठता का भाव बनता है । इसी में से घटना बनती है । वैदिक काल से इस क्लेश को दूर करने के लिये । सभी देवो मे एक परमात्मा रहते है । यह सिद्ध करने के लिये प्रयास होता रहा है । ''एकः अनेकेषु'' ''सर्व ब्रह्मः'' एक सत् विप्रां वहुधा वदन्ति यह वैदिक वाक्य सूचित करता है।

यहाँ पर जो सूचित किया गया है कि शिव और विष्णु परमात्मा के एक रुप होने के कारण एकात्मवाद को जन्म देता है । एक दूसरे के उपास्यदेव के प्रति सद्भाव और पूजाभाव रखना चाहिए । इससे उपासना अच्छी तरह से हो । तथा साथ ही साथ अपनी पूजा आनंद से कर सके । इन विचारो में से सर्वधर्म समभाव जैसे विचार बने है । इसाई, बुद्ध, इस्लाम आदि धर्म इत्यादि को एकात्म स्वरुप में मानना चाहिए।

इस प्रकार इस श्लोक में विष्णु और शंकर के ऐक्य का मत है । सर्वधर्म समभाव का सिद्धान्त भरा है।

अहमदाबाद मंदिर हवेली में प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के करकमलो द्वारा राखी के बक्से की भेट

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में हवेली प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुप गादीवालाश्री के करकमलो द्वारा अहमदाबाद क्षेत्र के प्रत्येक मंदिर में चलने वाली बच्चियो ने रक्षा के बोक्स भेट की है । शहर के छोटे-बड़े मंदिर से इसका वितरण किया गया था । छोटी बच्चियोने खुशी व्यक्त किया । धर्मकुल के रिवाज से मेरे भक्त सदा खुख रहे।

श्रीहरि के ६ठे और ७वे वंशज के मुख से अमृतवचनो

- संकलन : गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापुनगर)

प.पू. आचार्य महाराजश्री, बद्रीनाथ मंदिर पुनः मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा के अवसर पर, ता. ३१-०७-२०२५ : संतो-भक्तो को जयश्री स्वामिनारायण। अधिक आनंद आया। मै तो विलम्ब से आया लेकिन दीप प्रागट्य देख रहा था। सभी संत धामो धाम से आये थे। इस में से अभी अधिकलोग यहाँ पर है। मंदिर के उपर कांति ने और परिवार मिलकर परिश्रम किये है। पैसा दे देना पूरा ही नही है। लेकिन इसके लिये ध्यान रखना कठिन है। सत्य बात है न ? कितनी बार वहाँ से आये है। मुझे ज्ञात है। हवाई जहाज मे बैठकर आते थे। मुझे कोई जहाज से बैठाये तो नरक जैसा ही लगता है। मै सही बोल रहा हूँ। लेकिन सत्संग के प्रति लगाव है। इस लिये सबकुछ करते है। आज दूर देश से कच्छ से झालावाड से उत्तर गुजरात से सभी स्थान से अपने हरिभक्त आये है। तो कुच आकर्षण होगा ही।

इस परिवार की सेवा के लिये धन्यवाद, पैसा बाद मे आता है। उससे पहले विचार आता है। विचार आना ही चाहिए। इसमें प्रेरणा मिलती है। संकल्प लेने के बाद परिवर्तन करके आकार देना पडता है। इसके पीछे दौडना पडता है। कठिन कार्य होता है। विचार के साथ कार्य करना कठिन हो ता है। इस प्रांतमें कार्य करना, धक्का खाना हमे ज्ञात है। अब विकास हुआ है। इस लिये इतना हो रहा है। शेष Perf Foration देते नही थे। इतने वर्ष तक, कांति यह तोडकर बढाओ घटाओ इतना बराबर है। अच्छी सुविधा हो गयी है। छोटी-बड़ी शेष हो जायेगी, भगवान बैठे है।

आज नरनारायणदेव का दर्शन करने गये थे। संत भी साथ मे थे। हरिभक्त भी थे। अच्छा दर्शन मिला। बैठे और आनंद प्राप्त किये। मै तो बीते कल को ही आया। आप तपस्या करते है। यह तप की भूमि है। नरनारायणदेव की तपस्या की भूमि है। और हम सभी नरनारायणदेव के आश्रित है। इससे बडडा तीर्थधाम कोई नही हो सकता है।

अभी भगवत स्वामी ने कहा है। ले जाईये, ले जाईये, क्याले जायेगे ? तो गुणबुद्धि ले जाना है। कुछ अच्छा लेकर जाये। अंत में स्मृति बनाकर ले जाये। महाराज कहते थे कि उत्सव और समैया इसलिये करते है कि अंत समय में याद आये। तो...... यह याद रखना है।

मैने कांति को तारीख, देकर फोन करते रहना। देखते रहना। वेदांत स्वामी का फोन आया। हम कहे मैने तारीख दिया है। बाद में उपर से पहाड गिरा। यहाँ पर नही गिरा। मेरे उपर पडा। यहाँ पर तो कुछ गिरा नही था। जो बोले उस समय पर आना पडता है। अभी भाषण में यही कह रहे थे। इस तारीख पर जाकर क्या करना ? पहाडपर हवा चलती है। महंत स्वामी स्वेटर पहने है। मैने कहा ११ डिग्री है। चिंता करने की क्या आवश्यकता है। भगवान जैसे भगवान साक्षात है। यह मजाक कर रहे है। मेरे बालपन के दोस्त है।

कांति के साथ बद्रीविशाल का दर्शन करके आ रहा था तब मैने कहा इस तारीख से फोन में कहते थे कि

थक गये । हम कहे हमने तारीख दिये है । मुझे चारो तरफ से फोन आया फिर भगवान मिलते है तो कुछ निमित्ते होता है । नही तो इतना रहने की जगह एक रुप आप को नही मिला । इतना अच्छा वातावरण, इतना अच्छा प्रसंग हो गया । यह अपने लिये अद्‌भूत कार्य हो गया । आप अनुभव किये य यह प्रशंसा की वस्तु नही है । प्रत्यक्ष भगवान हमे मिले है । इसे साक्षातपन भी कहते है । हम नरनारायण के आश्रित है । जिसे हम सभी को गर्व है ।

इस स्थान पर ५-६ महीने बर्फ पडता है । इस में गोलोक स्वामी कार्य करते है । भगवान ने दया रखा है । गुणयुक्त किये है । सुनना ही नही है । सुनने मे जहर है । सुनने पर कष्ट होता है । कोई गाली दे खराब नही लगेगा । यह सब एसा है । देखना सुनना ही जहर है । वल्लभ स्वामी बोलने नही देते है । लेकिन देश-देशान्तर से इतने संत आये है । भुज से अधिक संत आये है । देखकर खुशी हुई । जल्दी आये होते तो आनंद आता है । हमें तो श्रद्धा है । आप लोग तो ८ माह यात्रा ही करते है ? यह कठिन है फिर भी आनंद मिलता है ।

धन्यवाद है इस परिवार को, जितने भाई-बहन यहाँ पर आये है । संत भी है । सांख्ययोगी बहने भी है । मुझसे कई लोग पूछते है । आप का बद्री मंदिर जाना हुआ । वह भी एक हरिभक्त ने बनवाया है । हम गर्वान्वित होते है । हमारा सम्प्रदाय कैसे है ? केवल क्षण मात्र विचार करे । गुणबुद्धि यदि ले तो हमे जो सम्प्रदाय मिला है । यह संसार में किसी को नही मिला है । ये भगवान, ये संत, ये हरिभक्त हमे मिले है यह कही पर नही मिलते है । इनकी ममता और अपनापन कभी समाप्त न हो इस पर ध्यान देना है । शेष यात्रा तो कई की जाती है । केवल धुमने जाते है । यह सत्य है । रास्ते में हम आ रहे थे । यू.पी. वाले टैक्सी ड्राईवर थे । गुजरात के लोग आते है तो भोजन लेकर आते है । जहाँ पर अच्छा लगता है । भोजन करने बैठ जाते है । आधी गाडी भोजन से भरी रहती है । मेरी खुद की गाडी भोजन से भरी थी । कुछ तो भगवान के उपर विश्वास रखो । भगवान वहाँ पर हमे देगे । कुछ लोग प्रसाद देते है । पड़ा है तो दूसरे को दे दे । इसी में आनंद और सुख है । अच्छा प्रबन्ध था । बयान कर नही रहा हूँ । कांति यह सत्य है । कई बार आना हुआ है लेकिन आज अंदर से खुश हो रही है । आप इतनी व्यवस्था किये तब मै आया । शेष मै तो आलसी हूँ । शायद नही आता । कारण कि रोज अडसठ तीरथ चरणे कोटि गया काशी-गाकर-धुमना कहाँ) तीर्थाटन करके करके मर जाना है । हमने ऐशा कौन सा पाप किये है । कि तीर्थाटन मे जाये। जो किये है वो जाये । अपने पास पुण्य की मात्रा अधिक है । इतने संत-महात्मा भगवान के लिये कार्य कर रहे है । क्या अब आप को कम पड़ रहा है ? यदि कम पडे तो अर्न्तदृष्टि करें ।

आप सभी आये है । अधिक आनंद आया । गादीवाला सोचते होगे इसी प्रकार इसी प्रकार ? एक दिन पहले आने वाले थे । फिर साथ में आये । पवित्र स्थान पर पवित्र दर्शन मिला । नरनारायणदेव का पवित्र स्थान है । पवित्रधाम है । मूल तो यही है ? इस लिये महाराजने अहमदाबाद मे नरनारायणदेव की प्रतिष्ठा किये । नव जो मंदिर है । इस सम्प्रदाय के लोग सुखी है । यह सत्य है । कोई नही माने घर जाये । लेकिन सत्य तो यही है ।

हम सभी भाग्यशाली है । नरनारायणदेव की यह भूमि है । ऐसे पवित्रधाम में आप सभी आये है । नरनारायणदेव सभी को सुखी करे । खुश होकर आर्शीवाद दे । इस परिवार ने सेवा की है । मेपाणी, सुतरिया है । सभी स्थान पर अच्छी सेवा देते है । छपैया में अच्छी सेवा किये है । भगवान की कृपा से अच्छा प्रसंग हुआ । संत-भक्त के उपर भगवान खुश रहे । आशीर्वाद दे । इस परिवार में संस्कार की वृद्धि हो । उन्नती हो ऐसी नरनारायणदेव के चरणो में प्रार्थना है ।

प.पू. बड़े महाराजश्री, (ओनलाईन आशीर्वाद : अपने बद्रीनाथ मंदिर के जीर्णोद्धार और नवीनीकरण के अवसर पर अधिक आनंद मिला।

इस मंदिर का इतिहास ऐसा है कि लगभग १९७५ के पास हम स्पेशियल ट्रेन लेकर बद्रीनाथ यात्रा में गये थे। आते समय ट्रेन हरिद्वार के प्लेटफार्म पर खडी हुई थी। उस समय प्टेलफार्म पर सभा की गयी थी। उस समय हमने हरिभक्तो से बोला था। हम सभी बद्रीनाथ की यात्रा तो कर लिये है। वहा पर धर्मशाला में ठहरे थे। यदि अपनी जगह हो जाये तो कैसा लगेगा ? यह विचार हरिभक्तो को अच्छा लगा। हरिभक्त बोले यही पर फंड करते है। बद्रीनाथ मंदिर के फंड की शुरुआत हरिद्वार स्टेशन से हो गयी थी। यात्रियों द्वारा ४० से ५० हजार फंड वही पर एकत्र हो गया था। मंदिर के प्रारम्भ की कहानी है।

इसके बाद संत, महंत स्वामी, कृष्णजीवन स्वामी मंदिर के स्थान को खोज किये। महाराज की दया से अच्छी जगह भी मिल गयी। मंदिर का निर्माण किया गया। लेकिन बद्रीनाथ के वातावरण के कारण प्रतिवर्ष कुछ निर्माण करना ही पडती है। बर्फ की वर्षा होती है। मंदिर चलाना कठिन होता है। संतो का वहाँ रहना भी कठिन कार्य है। संत कठिनश्रम तथा कष्ट सहन करते है। हरिभक्तो की रक्षा किये है। अभी भी गोलोक स्वामी कई वर्षो से परिश्रम करके मंदिर बना रहे है। उन्हे धन्यवाद है। मेपाणी परिवार भुज के संतो की प्रेरणा से इस मंदिर की अमूल्य सेवा दिये है।

यू-ट्युब मे देखते होगे। भुज के संतो की उपस्थित प्रेरणा-आशीर्वाद हमे अधिक अच्छा लगता है। हमारा अंतर से सभी को आशीर्वाद है। महाराज के चरणो में प्रार्थना है कि इस मंदिर द्वारा श्रीजी महाराज का जो सर्वोपरि सिद्धान्त है। वह अपने सत्संग में तथा गैर सत्संगि में भी प्रचार प्राण भरे। यात्रियों के ठहरने की आरामदायक व्यवस्था बने। ऐसी प्रभु के चरणो में वंदना है। सभी को धन्यवाद और आशीर्वाद के साथ विराम देता हूँ।

प.पू. आचार्य महाराजश्री, नारायण सरोवर मंदिर (कच्छ-भुज) मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा के अवसर पर ता. १३-०८-२०२५ : आदरणीय संतो और प्रिय हरिभक्तो आप सभी को जयश्री स्वामिनारायण, शुकदेव स्वामी आये। आप को हार पहनाये। आप शेष हो सूत्रधार हो।

आते समय संत लोग बात कर रहे थे। एक दिन का क्या कार्य ? २-४ दिन मुझे रखो तो शांत से बैठू। ऐसा शुद्ध आक्सीजन कहाँ मिलेगा ? ऐसी जगह पर यह सुविधा है। महत्वपूर्ण बात है। इसके पीछे महंत स्वामी तथा श्रेष्ठ संतो की प्रेरणा से सभी संत रामजीभाई की टीम के हरिभक्त तथा प्रत्येक हरिभक्त मिलकर अथकश्रम और सेवा दिय है। इस लिये सभी को धन्यवाद। यह फार्मेलिटी नही है। वातावरण देखकर एक दो दिन और रुक ने का मन कर रहा है। स्वामीने कहा हवादार जगह है। कोठार में से तारीख कम होतो। यह तो हास्य की बात है।

आप सभी के दीर्धदृष्टि से यह कार्य अच्छे से पूर्ण हुआ हा। यह वृक्ष बडा होगा। उसी के साथ हमारे बच्चे भी बडे होगे। यहाँ पर आकर कभी रहेगे। क्योकि सब वस्तुओ की आवश्यकता है। प्रकृति की आवश्यकता है। प्रकृति के गोद में रहकर भगवान की भजन हो, गाँव तथा मोबाईल मे नही हो सकता है। आज के समय में आदमी धुमने-फिरने जाता है। यहाँ पर आकर शांति का अनुभव होता है।

यह रंगीन अच्छा लगा। यह अंदर से रंगीन था। लगता भी है। इस लिये उतारना स्थायी रुप में नही पहनना। यह अपनी परम्परा और धरोहर है। इसलिये हमे अच्छा लगा है। धरोहर को बचाकर रखना है। भविष्य के पीढियो

को देना है। आज जो आप सेवा दे रहे है। वह भविष्य में अपनी परम्परा और सिद्धान्त को बचाने के लिये यह सत सेवाये है। यदि यह सुविधा नही होगी तो भविष्य की पीढी जाकर कहाँ पर बैठेगी। कोई निश्चित नही है। धर्म को बचाने, मर्यादा को बचाने के लिये करना पडता है। प्रतिदिन अपने सम्प्रदाय की वृद्धि और विस्तार हो। यह महाराज की ईच्छा से करना है।

ऐसा प्रोजेक्ट होने पर लोग जागृत होगे। नही पीढी यह देखेगी तो दूसरी जगह पर नही जायेगी। ऐसे प्रोजेक्ट पर विचार करना पडेगा। आज जो कार्य हो रहा है। भविष्य की पीढीयो के लिये किया जा रहा है। महाराज हम सभी के लिये कर रहे है। दूरगामी विचारधारा रखकर आयोजन किया जा रहा है। पैसा से पूर्व अपने पास मैन पावर भी है। जो बुद्धि का ब्रेन पावर है। और मानव संशाधन है। सिका सदुपयोग करके ऐसा कार्य किया गया है। यह बड़ी बात है।

देखे वेदर और पर्यावरण केसा है। अच्छी सुविधा हो आवश्यक विषय है। इसका अभी ज्ञान नही होगा १५ से २० वर्ष के बाद पता चलेगा। जब अपने बच्चे यहाँ रिलेक्स होने के लिये यहाँ आयेगे। तो भगवान उनके उपर खुश होगे।

बापजीने विशेषकर सभी को जयश्री स्वामिनारायण कहे है। सभी को याद किये है। खुश है। आईपेड के उपर आप को देखते है। इसका मन यहाँ पर ही है। कहते थे अच्छा कार्य हो रहा है।

अपना विस्तार और विकास हो यह गौरव की बात है। मूल सम्प्रदाय सभी को मिला है। प्रगट भगवान हम सभी को मिले है। इसे गर्व से आगे ले जाये। लेकिन वस्तु यह है कि हमे जो भगवान मिले है। नरनारायणदेव मिले है। उसका गर्व हे भूलना नही है। इसके पुर्नबल के लिये ऐसे प्रसंग, ऐसे मंदिर संकुल होते है।

यहाँ आप सभी बाहर बैठे है। आप का आक्सीजन २००% वैसे ही बढ जायेगा। हम लोग तो कंक्रीट के जंगल में रहते है। लंदन से संदेशा आया है कि ५-६ दिन आकर रुकना है। यदि लंदन जैसी व्यवस्था दे देतो ! तो लंदन में क्या है ? संकट रस्ते है। एक गाडी आये तो दूसरी जा नही सकती है। इससे अच्छा हमारे देश की सडके है। भले धक्का खाते जाये। वहाँ आधे-आधे बम्प बने है। दो तरफ टेकरा बीच में खड्डे रखते है। कंकड सिमेन्ट कम मिलता है। हम सभी यह सुविधा भगवान की कृपा से आप भगवान के साथ है। सत्संग में ममत्व है। इसी से होता है। दो दिन एककर अर्न्तद्रष्टि करीयेगा।

एक पोडकास्ट मे किसी ने अच्छी बात कही है। सप्ताह में एक दिन मोबाईल बंद रखे। वह अंग्रेज थे इस लिये उन्होने रविवार की प्रातः सोमवार का प्रातः कहे थे। इस प्रयोग से आप के फेमीली टाईम बढ जायेगा। परिवार के मतभेद कम हो जायेगे। मैने तो १५ से १६ वर्ष पहले कहा था कि एकादशी के दिन फोन बंद कर दे। एकादशी मे फलहारी आटा आ गया है। शेष कुछ रहा ही नही है। आज २४ घंटे मे मानव मात्र बाथरुम में सुखी है। साँस लेने का समय मिलता है। छाती पर हाथ रखकर बताये। बाहर रिंग बजे और आप बाहर आये तो आप दुःखी है। यह सत्य है। विना डिसटर्व वाली दुनिया बाथरुम में ही शेष डबला मिलता ही है। महाराज ने जो सिद्धान्त दिये है। हमे ध्यान भजन या मानसिक पूजा कैसे करना है। यह हम अपने लिये कर रहे है है। यह कभी कोई पूर्ण नही कर सकता है। यह मै लिखकर दे सकता हूँ। राजा-रजवाडो का पूर्ण नह ीहुआ। हमारी गाडी चलना बंद नही हुई है। प्लेन बंद होने वाला नही है। संत लोग दौड करते है। ये भगवत स्वामी लंदन से बद्रीनारायण आये।

मैने कहा आप धन्य है। आप को जादवजी भगत तथा वृद्ध संत, लोग सत्संग के लिये धुमते रहते है । काम करना छोटी बात नही है। हम लोगो में प्रेम और अपनापन है। ता. १४-८-२०२५ शुकदेव स्वामीने बात की सभी एक रहे। प्रारम्भ करना सरल है । समापन करना कठिन है । ताली बजा रहे है इसलिये रहना है। लेकिन कठिन कार्य है। इस तरह के कार्य के पीछे अधिक मेहनत कई लोगो का सहयोग, केवल धन से ही नही बल्कि तन, मन, समय का योगदान से सब कुछ होता है।

एक सुभाषित में लिखा है । सोचने से कुछ नही होता है। हिरण स्वयं शेर के मुख में नही आता है। परिश्रम करना पडता है।

महंत स्वामी का स्वास्थ्य सुगर कम हो गया है। इस लिये कमरे में बैठे है। उप महंत स्वामी संत आये तब महंत स्वामीने कहा अब थक गया हूँ । तब संतो ने कहा अभी आप को कार्य करना है । सम्प्रदाय के प्रति ममत्व है । लगाव है। तथा नरनारायणदेव के सहारा का बल है। यह बडी बात है।

महंत स्वामी से हम लोग बात कर रहे थे कि यह यात्रा का स्थान है। ऐसे सुविधा वाली कंई जगह बनते है और बिगड जाते है । शास्त्रानुसार अपने जेब से खर्च करके यात्रा करना चाहिए। इस लिये पहले भोज्य पदार्थ लेकर लोग यात्रा करते थे। अब तो सब तैयार मिल जाता है । संत लोग पहले गाडी में ६-८ माह का लिये सामान रख लेते थे। मै उस में बैठा हूँ। इस लिये भर करले जाते थे । यात्रा करना एक तपस्या है। अब तो सुखद हो गयी है। सुविधा भी हो गयी है । तीर्थ के साथ सुविधा की अवधारणा महंत स्वामीने दिया है । रामजीभाई और उनका परिवार ट्रस्टियो ने साकार किया है।

वीते कल शायं दर्शन करने गया था । यह शांति का स्थान है। सभी को यहाँ आना चाहिए। गर्व लेने वाली जगह है। यहाँ पर आकर कथा करना चाहिए। शांतिपूर्वक सुने। गंगा, काशी, गोदावरी नही जाना है। यह ऐसी जगह है । कच्छ चौबीस के अन्दर है । प्रसादी की जगह है । सुविधा सम्पन्न है। बगल में अच्छे मंदिर है। सरोवर अपने प्रसादी का है। कल पूजा करने गया था। संत साथ में थे। इन सभी बातो को बैलेन्स करना कठिन है। ममता से सब कुछ होता है।

भविष्य में अपनी पीढी इस जगह पर आकर रीक्रियेशन करे, तुफान करे, आनंद ले, खेले-कूदे यह व्यवस्था सत्संग में होना चाहिए। मर्यादा में रहकर होगा तो संस्कार बना रहेगा। सत्संग का विस्तार होगा।

नये वर्षा का केलेन्डर, दट्टा प्रकाशित हो गया है। शीघ्रातिशीध्र प्राप्त कर ले

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री और प.पू. भावि आचार्य १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री द्वारा पसंद किये अलौकिक, दर्शनीय सुंदर नये वर्ष का केलेन्डर प्रकाशित किया गया है । (अपने श्री नरनारायणदेव देश के छोटे-बडे प्रत्येक मंदिर को यही केलेन्डर बनवाना होगा। इसमें कोई परिवर्तन नही होगा। जिसे सभी संत, कोठारीश्री नोंध ले) यह अपने मंदिर के साहित्य केन्द्र के उपर मिलेगा।

और नये वर्ष विक्रम संवत २०८२ के वर्ष का दट्टा भी प्रकाशित हो गया है। जो सभी हरिभक्त प्राप्त कर ले।

कालुपुर मंदिर कोठार कार्यालय

बालु स्वामी : ९४२७० ७०३७१

सुरेशभाई : ९१७३० ८९०३०

श्री नरनारायणदेव युवक मंडल

श्री विपुलभाई : ९७२५४ ४९२८८

श्री प्रयागभाई : ९४२९० ६७५८४

श्री स्वामिनारायण

समैया ना ઉપલક્ષમાં

२१२ કલાક

श्री नरनारायणदेव देश के २१२ गाँवो की

श्री स्वामिनारायण महामंत्र अखंड धून

सर्वावतारी सर्वोपरि भगवान श्री स्वामिनारायण ने अपने स्वहस्त से लिखी शिक्षात्री के २०० वर्ष पूर्ण होने जा रहा है । इस समय इसकी ''समैया'' के अवसर में ''स्वामिनारायण महामंत्र'' की २१२ घंटे की ता. १५-८-२०२५ से ता. २४-८-२०२५ तक लगातार १० दिन की धुन हुई । जिसका लाभ २५० से अधिक गाँव के हरिभक्तोने लिया । इस धुन की विशेषता यह है कि धुन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से साथ पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा अहमदाबाद मंदिर के महंत स्वामी स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकासदासजी के मार्गदर्शन से प्रगट भगवान श्री नरनारायणदेव और धर्मकुल के सानिध् यमें अक्षरधाम तुल्य प्रसादी के सभा मंडप में पवित्र चातुर्मास और पवित्र श्रावण मास, १० दिन में १ दिन जन्माष्टमी, १ दिन अजा एकादशी तथा १ दिन अमावस्या पर्व का समावेस होता है । तब ''स्वामिनारायण महामंत्र'' का शास्त्रो मे जो महिमा लिखी है । उससे अनंत गुण का फल प्राप्ति अर्थात् श्रीहरि के अनंतगणो की खुशी से सहभागी भक्तगण है । इसमें कोई शंका का स्थान नही है ।

स्वामिनारायण भगवान की महिमा कोई वर्णन नही कर सकता है । उसी प्रकार उनके नाम के महिमा का वर्णन नही कर सकता है । क्योकि नाम के पीछे 'नामी' है ।

જે સ્વામિનારાયણ નામ લેશે,
તેના બધા પાતક બાળી દેશે,
છે નામ મારા શ્રુતિમાં અનેક,
સર્વોપરી આજ ગણાય એક...૧
જો સ્વામિનારાયણ એકવાર,
રટે બીજા નામ રટ્યા હજાર,
જપ્યા થકી જે ફલ થાય એનું,
કરી શકે વર્ણન કોણ તેનુ ? ... ૨
ષડક્ષરી મંત્ર મહાસમર્થ,
જેથી થશે સિધ્ધ સમસ્ત અર્થ,
સુખી કરે સંકટ સર્વ કાપે,
અંતે વળી અક્ષરધામ આપે... ૩

भगवान की भक्ति करने वाला मनुष्य मुख से स्वामिनारायण भगवान का नाम लेता हो तो शुद्ध हो तो भी देवताभी नमस्कार करते है ।

हमें सहजानंद स्वामी मिले है । वे स्वयं को ''स्वामिनारायण'' अपने मुख से कहे इस लिये प्रसादी के रुप में है ।

प.पू. बड़े महाराजश्री के शब्दो में इस नाम की महिमा संक्षिप्त रुप में कहे तो सेलफोन से सीधे व्यक्ति से बात कर सकते है । उसी प्रकार 'स्वामिनारायण' नाम की धुन महाराज के साथ सीधा सम्पर्क है ।

अखंड दस दिन स्वामिनारायण महामंत्र धुन मे पूरा श्री नरनारायणदेव देश आया था । रात-दिन गाँव-गाँव से हरिभक्त बड़े समूह में आये थे । अहमदाबाद मंदिर के पू. महंत स्वामी और उनेक मंडल के सभी संत-हरिभक्त स्वयं सेवक, श्री नरनारायणदेव युवक मंडल श्रध्धा के साथ भक्ति पूर्वक सभी को सम्भाले थे । दस दिन में किसी न किसी का स्वास्थ्य वस्तु का खो जाना, यह सब नही हुआ ।

प.पू. महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के आज्ञा से अपने सभी संत पू. महंत स्वामी, पू. संत स्वामी, पूजारी पू. देव स्वामी अपने अहमदाबाद, भुज और मूली देश से भी अनेक संत-महंत की कीम लेकर धुन में पधारे थे । २५० से अधिक संत-हरिभक्त ५० घंटे से अधिक धुन में बैठकर भजन किये थे । धुन के महोत्सव

की विविध प्रकार की सेवा मे लोग जुडे थे । सभी संत हरिभक्त, स्वयं सेवको श्री नरनारायणदेव युवक मंडल, संगीत, तबला, वादक इत्यादी सेवा देने वालो का श्रीहरि शुभ करे । नरनारायणदेव के चरणो में प्रार्थना है।

ता. १५-८-२०२५ से ता २४-८-२०२५ तक अखंड धुन के मुख्य यजमानश्री

अखंड धून के मुख्य यजमानश्री : भगवान श्री नरनारायणदेव के खुशी के लिये - एक हरिभक्त।

अखंड धून के सह यजमानश्री : प.भ. किशोरभाई झवेरभाई फिणवीया - ह. हर्षिल और वासुदेव, न्यु निकोल - अमदावाद।

प्रथम दिवस की धून के भोजन प्रसाद के यजमानश्री : अ.नि. नर्मदाबेन वसंतभाई टांक - ह. प.भ. रसिकभाई वसंतभाई टांक।

दूसरे दिन के धून के भोजन प्रसाद तथा नास्ता के यजमानश्री : प.भ. प्रविणभाई नटवरभाई पटेल - सेडलावाले परिवार तथा प.भ. परसोतमभाई त्रिभोवनदास पटेल भाउपुरावाला - परिवार।

तिसरे दिन के धून का भोजन प्रसाद के यजमानश्री : प.भ. कोकिलाबेन विष्णुभाई पटेल - बिलासीयावाला - ह. शीतलबेन धवलभाई पटेल।

चौथे दिन की धून के भोजन प्रसाद के यजमानश्री : प.भ. वासुदेवभाई रामचंद्रभाई पटेल - चांदखेडागाम।

पाँचवे दिन के धून का भोजन प्रसाद तथा नास्ताना यजमानश्री : अ.नि. स.गु. ब्रह्मचारी स्वामी राजेश्वरानंदजी - ह. श्री नरनारायणदेव पूजारी मंडलना हेत रुचिवाला हरिभक्तो तरफथी।

छठ्ठा दिन धून का भोजन प्रसाद तथा नास्ता के यजमानश्री : अ.नि. स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकेशवदासजी - ह. शिष्य मंडलना हरिभक्तो तरफ से सेकटर-२३ गांधीनगर।

सातवे दिन की धून का भोजन प्रसाद तथा नास्ता के यजमानश्री : प.भ. श्री कांतिभाई केवलदास पटेल (कार्पेटवाला) - ह. कल्पेशभाई पटेल।

आठवे दिन के धून के भोजन प्रसाद के यजमानश्री : प.भ. पर्व चिरायु प्रविणभाई देवाणी - ह. अ.सौ. मितल चिरायु देवाणी।

नवमे दिन के धून के भोजन प्रसाद तथा नास्ता के यजमानश्री : हरिॐ परिवार - सरसपुर - अ.नि. धनलक्ष्मीबेन माणेकलाल भावसार - ह. हरेशभाई, शैलेषभाई, रूद्रभाई, बीनाबेन, दीपीकाबेन, रिध्धि।

शुभेच्छक यजमानश्री : अ.नि.प.भ. वल्लभभाई पोपटभाईना स्मरणार्थे - ह. खीचडीया परिवार।

धून के नास्ता के यजमानश्री : प.भ. नागरभाई ईश्वरभाई पटेल (मारूसणावाला) (प्रथम दिवसना नास्ता के यजमान), प.भ. ईश्वरभाई डाह्याभाई - कडीवाला (त्रीजा दिवसना नास्ता के यजमान), अ.नि.प.भ. बालजीभाई चंदुलाल पटेल - ह. राजुभाई तथा संजयभाई तथा कीरीटभाई (कोटेश्वर) (चोथा दिवसना नास्ता के यजमान), अ.नि.प.भ. प्रतापसिंह भरतसिंह झाला (समलावाला) - ह. श्यामभाई तथा रामभाई (आठमां दिवसना नास्ता के यजमान)।

साउन्ड के यजमानश्री : अ.नि. मीनाबेन दशरथभाई पटेल - ह. ध्यान और सखी (चांदखेडा)।

धून का लाईव प्रसारण लगातार २१२ घंटे कालुपुर मंदिर के यू-ट्यब चैनेल पर लगातार आया था शिक्षा चैनेल को धन्यवाद । धुन में आने वाले सभी हरिभक्तो के लिये चाय-काफी-दूध-नास्ता और भोजन प्रसाद की व्यवस्था सुंदर रुप से किये थे।

अन्य सेवा में नगद, अनाज, सब्जी, दूध, पानी की बोतल, मुखवास, आईस्क्रीम आदि की सेवा देने वाले : प.भ. संजयभाई आर. सोनी, प.भ. विनोदभाई पटेल (मणीपुरा), प.भ. भरतभाई (सहजानंद ट्रावेल्स), बदपुरा गाँव के समस्त, प.भ. गांडाभाई पटेल (गुलाबपुरा), प.भ. प्रदिपाबेन नारणभाई पटेल, प.भ. अरुणाबेन पोपटभाई पटेल, प.भ. जिग्नेशभाई रश्मिकांत भावसार, प.भ. कल्पित बकाभाई गज्जर (कलोल), प.भ. रतीभाई खीमजीभाई पटेल (मेडा), श्री नरनारायणदेव के खुशी हेतु, प.भ. दिग्नेशभाई पटेल (रादेसणा), प.भ. वालजीभाई करशनभाई हिराणी (आफ्रिका), प.भ. कांतिभाई खीमीभाई पटेल

(बोल्टन), ब.भ. अमृतभाई एस. पटेल (अहमदाबाद), वर्त मनोभाई, प.भ. अरविंदभाई दोंगा (अहमदाबाद), प.भ. अम्बालालभाई पटेल (गवाडा), प.भ. शैलषभाई पटेल (मोखासण) आदि नाम-अनामी अनेक हरिभक्तोने छोटी-बडी सेवा दिये थे । ये सभी धन्यवाद के पात्र है ।

ऐसी अलौकिक २१२ घंटे की अखंड श्री स्वामिनारायण महामंत्र धुन श्री नरनारायणदेव के सानिध्यमें और धर्मकुल की छाया में जो-जो भक्त, बालक, युवा, वृद्ध, बहन, सांख्ययोगी, माताओ, स्त्रीयो आदि भगवान श्री नरनारायणदेव इनका मंगल करे ।

लगातार १० दिन तक सेवा में शास्त्री स्वामी नारायणमुनिदासजी (कोठारी), स.गु. स्वामी जयप्रकासदासजी, बालु स्वामी, भंडारी स्वामी धर्मस्वरुपदासजी, स्वामी दिव्यस्वरुपदासजी, भक्ति स्वामी आदि संत मंडल तथा हरिभक्तो में ट्रस्टीश्री रमेशभाई कोठारी, प.भ. पूरवभाई पटेल, प.भ. रणजीतसिंह दरबार, प.भ. हर्षदभाई, पंकजभाई भावसार आदि कई संत हरिभक्त सेवा दिये थे । इन लोगो के उपर नरनारायणदेव की कृपा तथा धर्मकुल की खुशी प्राप्त हो । ऐसी महाराज के चरणो में प्रार्थना है ।

ता. १५-८-२०२५ से ता. २४-८-२०२५ के मध्य श्री नरनारायणदेव देश अगमदाबाद, मूली, भूज-कच्छ के संत-हरिभक्तो धून किये उनकी सूची :-

ता. १५-८-२०२५ शुक्रवार के दिन : जडेश्वरपार्क, महादेवनगर, रामोल, जामफलवाडी, वस्त्राल, निरात चोकडी, न्यु निकोल, निकोल, नरोडा आदिश्वरनगर, सादरा वासणादेश, कर्मशक्तिपार्क, झुंडाल, जमीयतपुरा, ईसंड, अडालज ।

ता. १६-८-२०२५ शनिवार के दिन : न्यु राणीप, राणीप, लुणावाडा देश, बापुनगर, एप्रोच, विराटनगर, हर्षद कोलोनी, सैजपुर बोधा, सरसपुर, घाटलोडीया, शीलज, सायन्स सीटी, थलतेज, बोडकदेव, आर.सी. टेकनिकल, गोता वंदेमातरम्, गोतागाम, वैष्णोदेवी, शांतिग्राम (अदाणी), कांकरिया, घोडासर, गोमतीपुर, अमराईवाडी, खोखरा, रात्री प्रोग्राम में प.भ. पूरव पटेल अने साथी मित्रोने, जन्माष्टमी उत्सव ।

ता. १७-८-२०२५ रविवार के दिन : कालुपुर कोट विस्तार, न.ना.देव सत्संग मंडल, ओच्छव मंडल, श्री नरनारायणदेव युवक मंडल, अमदावाद शहेर, न्यु निकोल, निकोल, जीवराजपार्क, अंजली मंदिर, , धमासणा, ओला, रामनगर (कलोल), , मोटेरा, कालीगाम, साबरमती, कोटेश्वर, जनतानगर, चांदखेडा,, टी.पी. ४४, सुघड, साबरकांठा, ईडर देश ।

ता. १८-८-२०२५ सोमवार के दिन : ईडर देश, साबरकांठा, नारणघाट, नाना चिलोडा, बावला, भायला, नलकंठो देश, कटोसण, मारूसणा देश, डांगरवा-डाभी, डांगरवा-तलपद, वेडा, गोविंदपुरा, करजीसण, टांकिया, वणझर, बोपल, भात, काशींद्रा, पालडी (गाम), बनासकांठा देश , दियोदर, भाभर, डीसा, थरा, हारिज, उचपा तथा भालजा मंडल के हरिभक्तो ।

ता. १९-८-२०२५ मंगलवार के दिन : संतरामपुर देश, आंतरोली देश, नारणपुरा, गांधीनगर से-२, रायसण, कुडासण, रांदेसण, पी.डी.पी.यु., कणभा देश, कपडवंज, बालासिनोर देश, कडी मंदिर, कडी अनमोल विला, मेमनगर, खाखरीया देश ।

ता. २०-८-२०२५ बुधवार के दिन : खाखरीया, मेमनगर, मंगला आरती ग्रुप, फुलमंडली ग्रुप कालुपुर, कलोल पंचवटी देश, गंजीवास, झुलासण, भगवानपुरा, पलसाणा, श्रेयस, बोरीसणा, वडु, करजीसण, आणंदपुरा, भवपुरा, खोरज, कांठो विस्तार, विजापुर, वजापुर, जेपुर, हाथीपुरा, शाकापुर, रणछोडपुरा, भीमपुरा, संतपुरा, फलु, ट्रेन्ट, सीतापुर देश, विरमगाम देश, नाना उभडा, पोर-वावोल देश, पोर, वावोल, अंबापुर, उवारसद, महेसाणा देश ।

ता. २१-८-२०२५ गुरुवार के दिन : राजस्थान, , मारवाडी, राजस्थान, मारवाडी, खाण, शिरोही, नवावाडज, धोलका देश, सिध्धपुर देश, उंझा ब्राह्मण शेरी, उंझा पंचवटी, चाणस्मा, पाटण, जसलपुर, मंडलोप, प्रांतिज देश, कुंडाल-राजपुर देश, बिलोदरा, व्यास पालडी, आजोल, चराडा, रिद्रोल ।

પ.પૂ.લાલજી મહારાજશ્રીની નિશ્રામાં અમદાવાદ મંદિરમાં તથા નારણઘાટ મંદિરમાં જલઝીલણી ઉત્સવ

અમદાવાદ મંદિરમાં ગણેશ ચતુર્થી ઉત્સવ

અમદાવાદ મંદિરમાં પ.પૂ.મહારાજશ્રીના વરદ્ હસ્તે સંત મહાદીક્ષા

પૂનમના દિને અમદાવાદ મંદિરમાં પ.પૂ.મહારાજશ્રીના વરદ્ હસ્તે પર્યાવરણના ભાગરૂપે લીમડાના વૃક્ષનું નિઃશુલ્ક વિતરણ કરાયું હતું

સમૈયો ના ઉપલક્ષમાં

૨૧૨ ગામનાં હરિભક્તો દ્વારા

શ્રી સ્વામિનારાયણ મહામંત્ર

૨૧૨ કલાક

અખંડ ધૂન

તા.૧૫-૮-૨૦૨૫ થી ૨૪-૮-૨૦૨૫

દિવસ ૧

દિવસ ૨

સમૈયા ના ઉપલક્ષમાં

૨૧૨ ગામનાં હરિભક્તો દ્વારા

શ્રી સ્વામિનારાયણ મહામંત્ર

અખંડ ધૂન

૨૧૨ કલાક

તા.૧૫-૮-૨૦૨૫ થી ૨૪-૮-૨૦૨૫

દિવસ 3

દિવસ ૪

દિવસ ૫

સમૈયો ના ઉપલક્ષમાં

૨૧૨ ગામનાં હરિભક્તો દ્વારા

શ્રી સ્વામિનારાયણ મહામંત્ર અખંડ ધૂન

૨૧૨ કલાક

તા.૧૫-૮-૨૦૨૫ થી ૨૪-૮-૨૦૨૫

દિવસ ૬

સમૈયા
ના ઉપલક્ષમાં

૨૧૨ ગામનાં હરિભક્તો દ્વારા

શ્રી સ્વામિનારાયણ મહામંત્ર

૨૧૨ કલાક

અખંડ ધૂન

તા.૧૫-૮-૨૦૨૫ થી ૨૪-૮-૨૦૨૫

દિવસ ૭

દિવસ ૮

સમૈયો ના ઉપલક્ષમાં

૨૧૨ ગામનાં હરિભક્તો દ્વારા

શ્રી સ્વામિનારાયણ મહામંત્ર

૨૧૨ કલાક

અખંડ ધૂન

તા.૧૫-૮-૨૦૨૫ થી ૨૪-૮-૨૦૨૫

दिवस ९

दिवस १०

સમૈયા ના ઉપલક્ષમાં

૨૧૨ ગામનાં હરિભક્તો દ્વારા

શ્રી સ્વામિનારાયણ મહામંત્ર

૨૧૨ કલાક

અખંડ ધૂન

તા.૧૫-૮-૨૦૨૫ થી ૨૪-૮-૨૦૨૫

અખંડ ધૂન પ્રસાદ

અખંડ ધૂન પ્રસાદ

છપૈયા મંદિરમાં ઠાકોરજી સમક્ષ સોપારી-નાડાછડીના હિંડોળા દર્શન

વડનગર મંદિરમાં શ્રી ગણપતિજીના વરઘોડાના દર્શન

ઓકલેન્ડ ન્યુઝીલેન્ડ મંદિરમાં ત્યાંના વડાપ્રધાન પધાર્યા ત્યારે ડો.કાંતિભાઈ પટેલ તથા તેમના ધર્મપત્નિ સાથે

બિલોદરા મંદિરમાં સમૈયાના ઉપલક્ષમાં સત્સંગ સભા

સમૈયાના ઉપલક્ષમાં પ.પૂ.લાલજી મહારાજશ્રીની નિશ્રામાં ઔપચારિક મિટિંગ

નવા વાડજ મંદિરમાં સમૈયાના ઉપલક્ષમાં હરિભક્તો દ્વારા બનાવાયેલ શિક્ષાપત્રી નિહાળતા અમદાવાદ મંદિરના મહંત સ્વામી

સમૈયાના ઉપલક્ષમાં ''પ્રસાદમ''દ્વારા કોટેશ્વર ગુરૂકુળમાં ચાલતી પ્રવૃત્તિ

સમૈયાના ઉપલક્ષમાં અંબાજી પદયાત્રીઓ માટે ભોજન કેમ્પને ખુલ્લો મુકતા અમદાવાદ મંદિરના મહંત સ્વામી તથા સંતો

ता. २२-८-२०२५ शुक्रवार के दिन : मोतीपुरा, आनंदपुरा, गवाडा, गेरीता, देलवाडा, पिलवाई, विसनगर (सोसायटी विस्तार), वालम, विहार, कुकरवाडा, रामनगर, वडनगर, भुज मंदिर, महादेवनगर, निरात चोकडी, माणेकपुर (चौधरी), मकामाड, भीमपुरा, मुबारकपुरा, पीपलज।

ता. २३-८-२०२५ शनिवार के दिन : बदपुरा, ईश्वरपुरा, , वरसोडा, गुनमा, कल्याणपुरा, हिंमतपुरा (लाकरोडा), बालवा, माणेकपुर (घनश्यामनगर), रामपुरा, प्रतापपुरा, आमजा, सुरत हालार देश श्री न.ना.देव युवक मंडल तेमज समस्त सत्संग मंडल सुरत, राजकोट (हालार देश), मूली देश, लींबडी - भाल, मूली देश, हलवद, मच्छुकांठो, सुरेन्द्रनगर, मूली - चोवीसी, मेथाण-धांगध्रा, माणसा, ईटादरा, गुलाबपुरा, चांदीसणा, वागोसणा, सरढव, मोखासण, ता. २३-८-२०२५ सवारे ९ थी १२, बपोरे १२ थी ३, बपोरे ३ थी ६, सांजे ६ थी ९, सवारे ९ थी रात्रे ९ वाग्या सुधी भक्तिनंदन स्वामी (हलवद), लींबडी-भाल, मेथाण, ध्रांगध्रा, सुरेन्द्रनगर, मूली चोवीसीना हजारो हरिभक्तोने धून में रमझट बोलावी हती।

मूली प्रदेश के संतो मे आत्मप्रकाश स्वामी, लींबडी महंत प्रेमवल्लभ स्वामी, मूली श्री राधाकृष्णदेवना पूजारी सेवावत्सल स्वामी, चराडवा महंत स्वामी दिव्यप्रकाश स्वामी, मोरबी महंत प्रेमस्वरूप स्वामी, ध्रांगध्रा जिस में मूली महंत स्वामी, सुरेन्द्रनगर स्वामी नित्यप्रकाश स्वामी, शा. सत्संगसागर स्वामी आदि संतो पधार्या हता।

ता. २४-८-२०२५ रविवार के दिन : सोलैया, समौ, वसई, सोजा, नारदीपुर, बापुपुरा, मोटी आदरज, सालडी, लांधणज, मेउ, गोजारीया. पू संतो, पूरव पटेल, जयेश सोनी, ओम सोनी, निशाद सोनी वगेरे।

श्री नरनारायणदेव देश के आगामी उत्सव

आश्विन सुद-२ ता. २३-९-२०२५ मंगलवार अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव देश पीठाधिश्वर प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के गद्दी पट्टाभिषेक (सं. २०६० अमदावाद)

आश्विन सुद-१० ता. २-१०-२०२५ गुरुवार प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का ५३ वाँ प्राकट्योत्सव।

आश्विन सुद-११ ता. ३-१०-२०२५ शुक्रवार पांशांकुशा एकादशी व्रत।

आश्विन सुद-१४ ता. ६-१०-२०२५ सोमवार शरदोत्सव-शरदपूर्णिमा।

आश्विन सुद-१५/१ ता. ७-१०-२०२५ मंगलवार मुकुटोत्सव पुनम, एकम का क्षय।

आश्विन वद-२ ता. ८-१०-२०२५ बुधवार बावला मंदिर का पाटोत्सव।

आश्विन वद-३ ता. ९-१०-२०२५ गुरुवार प.पू. आदि आचार्य श्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री द्वारा प्रस्थापित श्री वीर हनुमानजी महाराज के शतामृत पाटोत्सव असारवा स्वा. गुरुकुल।

आश्विन वद-११ ता. १७-१०-२०२५ शुक्रवार रमा एकादशी का व्रत।

अहमदाबाद मंदिर द्वारा हरि मंदिरो के लिये शुध्द और पवित्रता से बना अन्नकूट

अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव देश के समस्त हरिमंदिरो के कोठारीश्री को अवगत करते आनंद हो रहा है कि प.पू. लालजी महाराजश्री के आज्ञा से नूतन वर्ष के ठाकुरजी को अन्नकूट अपने कालुपुर मंदिर द्वारा पू. महंत स्वामी और संतो की देखरेख के अर्न्तगत शुद्द पवित्र से बनवायेगे। जिससे अपने छोटे-बड़े मंदिर के कोठारीश्री अपने हरिमंदिर के लिये अन्नकूट बनवाना हो तो दिपावली से पूर्व अपने मंदिर के आवश्यकतानुसार आर्डर लिखवा दे। तथा पैसा जमा करके रसीद प्राप्त कर ले।

सम्पर्क - कालुपुर मंदरि कोठार आफिस

कोठारी बालु स्वामी : ९४२७० ७०३७१ ● सुरेशभाई : ९१७३० ८९०३०

ओकलैण्ड (न्युझीलैण्ड) अपने मंदिर में नूयीझीलैण्ड के प्रधानंत्री दर्शन के लिये आये

अपने ओकलैण्ड (आई.एस.एस.ओ.) न्यूझीलैण्ड श्री स्वामिनारायण मंदिर में २३ अगस्त २०२५ के दिन अपने प.भ. डॉ. कांतिभाई पटेल की धर्मपत्नी डॉ. रंजना पटेल की ''डेम कम्पेनियन आफ द न्यूझीलैण्ड औरडर आफ मेरिट'' के रुप में नियुक्ति के खुशी के अवसर पर न्यूझीलैण्ड के प्रधानमंत्री क्रिस्टोफरलकसन, स्थानिक कम्यूनिटी मंत्री मार्कमिरोल, ओकलैण्ड में भारत के कोन्सुल जनरल डॉ. मदन मोहन शेखी, तथा पोलिस मुख्य स्थानीय सांसद सदस्य उच्च अधिकारी लगभग ५०० लोग मेहमान आये थे। मंदिर में श्रीहरिका दर्शन किये। डॉ. दम्पति द्वारा बनाये गये मंदिर के संकुल में लग्न प्रसंग हाल, परिषद, सांस्कृतिक प्रदर्शन, पुरस्कार समारोह देखकर आभार व्यक्ति किये थे।

प्रधानंत्रीश्री, आमंत्रित मंत्री, अधिकारी, पोलीस मुखिया को धन्यवाद दिये।

SHREE SWAMINARAYAN TEMPLE - KALUPUR

BANK DETAILS FOR ONLINE / CHEQUE DONATION PURPOSE

STATE BANK OF INDIA
NAVRANGPURA BRANCH, AHMEDABAD
BENEFICIARY NAME - SHREE SWAMI NARAYAN MANDIR TRUST
A/C. NO. 62303101798
IFSC : SBIN0003096
MICR CODE : 380 002 029

INDIAN BANK
VASTRAPUR BRANCH, AHMEDABAD
BENEFICIARY NAME - SHREE SWAMI NARAYAN MANDIR TRUST
A/C. NO. 50379847476
IFSC : IDIB000V135
MICR CODE : 380 019 019

BANK OF INDIA
RELIEF ROAD BRANCH, AHMEDABAD
BENEFICIARY NAME - SHREE SWAMI NARAYAN MANDIR TRUST
A/C. NO. 201310100027259
IFSC : BKID0002013
MICR CODE : 380 013 027

दीपोत्सव का कार्यक्रम

चोपडा खरीदने के लिये : आश्विन वद-८ ने मंगलवार ता. १४-१०-२०२५ के दिन पुष्य नक्षत्र होने से चोपडा खरीदने का मुहूर्त अच्छा है।

आश्विन वद-९ बुधवार ता. १५-१०-२०२५ प्रातः ११-५९ के बाद पुष्य नक्षत्र है। चोपडा का ओर्डर दे सकते है। वस्तु खरीदने का अच्छा मुहूर्त है।

धनतेरश : आश्विन वद-१२ शनिवार ता. १८-१०-२०२५ धनतेरश, महालक्ष्मी पूजन।

काली चौदश : आसो वद-१३ रविवार ता. १९-१०-२०२५ कालुपुर मंदिर श्री हनुमानजी महाराज का पूजन-आरती शायं ७ बजे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के करकमलो द्वारा पूर्ण होगी।

आश्विन वद-१४ सोमवार ता. २०-१०-२०२५ कालुपुर मंदिरमें समूह शारदा पूजन-चोपडा पूजन शायं ६ बजे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के करकमलो द्वारा पूर्ण होगा।

दीपोत्सव : आश्विन वद-३० मंगलवार ता. २१-१०-२०२५.

नूतनवर्ष : वि.सं. २०८२ कारतक सुद-१ बुधवार ता. २२-१०-२०२५.

अन्नकूट दर्शन प्रात : १० बजे से ३-३० बजे
मंगला आरती प्रात : ५-00 बजे
श्रृंगार आरती प्रात : ६-३० बजे
गोवर्धन पूजा प्रात : ८-00 बजे
राजभोग आरती प्रात : १०-१० बजे

श्रीहरिना ६ट्ठे, ७ वे और ८ वे वंशज के करकमलो के द्वारा होगा।

नूतन वर्षके प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कालुपुर मंदिर मे अपनी बैठक में सभी हरिभक्तो को दर्शन देगे।

सूचना : समूह शारदा पूजन में लाभ लेने वाले भक्तो अपने चोपडे को २ लाल रंग के वस्त्र मे पता, फोन, मोबाईल नं. लिखकर कोठारी कार्यालय में रू. ५००/- देकर जमा कराके रसीद प्राप्त करे ले।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम

श्री स्वामिनारायण म्युजियम के द्वार से

सभी हरिभक्तो की सुविधा के लिये
प.पू. आचार्य महाराजश्री एवम् समग्र धर्मकुल के संकल्प से अब
श्री स्वामिनारायण म्युजियम के नये स्थापना दिन
हर वर्षे दि. २९ मार्च के दिन पर मनाया जायेगा

भाद्रमास सुद-४ को गणेश चतुर्थी के दिन श्री स्वामिनारायण म्यूजियम में प्रति वर्ष की तरह श्री गणपतिजीकी आरती पूजन की जाती है। जिस में कई हरिभक्त लाभ उठाकर धन्यता अनुभव करते है।

श्री स्वामिनारायण म्यूजियम में रखी गई ये दोनो मूर्तियाँ श्रीजी महाराज की प्रसादी है। बाये तरफ की मूर्ति कालुपुर मंदिर में श्री नरनारायणदेव के गर्भगृह में स्थापति किये। तथा श्रीहरि स्वयं पूजे थे। तथा दाहिने तरफ की मूर्ति श्री नरनारायणदेव की प्रतिष्ठा के समय मे रखा गया था। जिसकी पूजा भी श्रीजी महाराज स्वंय किये है। ऐसी अलौकिक मूर्तियो का दर्शन अपने म्यूजियम मे कर सकते है।

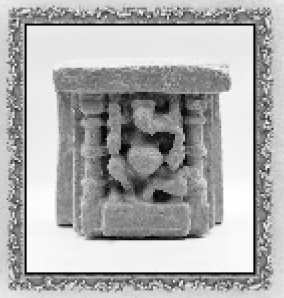

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में पंजीकृत श्री महाविष्णुयाग की सूची-अगस्त-२०२५

ता. ०३-०८-२०२५ श्री नरनारायणदेव सत्संग समाज – वडु – ह. जयंतिभाई पटेल।
ता. १०-०८-२०२५ प.भ. तेजसभाई हसमुखभाई सोनी – नारणपुरा।
ता. १४-०८-२०२५ प.भ. मनहरभाई गोपालजी चावडा – जीवराजपार्क।
ता. १५-०८-२०२५ प.भ. दिपककुमार चिमनलाल पटेल परिवार – कोबा-गांधीनगर।
ता. १६-०८-२०२५ (प्रातः) श्री नरनारायण सत्संग समाज – हिंमतनगर – ह. भावेश पटेल।
ता. १६-०८-२०२५ (११ बजे) श्री स्वामिनारायण मंदिर – हिंमतनगर – प्रेरक महंत स्वामी सद्‌गुणदासजी।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में भेट देनेवालों की सूची-अगस्त-२५

रू। १,१०,०००/- श्री स्वामिनारायण मंदिर अेल्डोरेट – केन्या – हरिभक्तो समस्त केन्या ।

शुभ प्रसंग पर भेंट देने के योग्य अथवा व्यक्तिगत संग्रह के लिये – श्री नरनारायणदेव की प्रतिमा वाला ५/१०/२० ग्राम चांदी का सिक्का म्युजियम में प्राप्त होता है।

सूचना :श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. मोटा महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं।

સંપ્રદાયમાં એક માત્ર વ્યવસ્થા શ્રી સ્વામિનારાયણ મ્યુઝિયમમાં મહાપૂજા / મહાભિષેક નોંધાવવા સંપર્ક કરો.
મ્યુઝિયમ મોબાઈલ:- ૯૮૭૯૫૪૯૫૯૭, પ.ભ. પરષોત્તમભાઈ - દાસભાઈ (બાપુનગર) : ૯૯૨૫૦૪૨૬૮૬
www.swaminarayanmuseum.org/com • email: swaminarayanmuseum@gmail.com

भक्तिसुधा

(प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के आशीर्वचन में से) एकादशी सत्संग सभा के अवसर पर (कालुपुर मंदिर हवेली) "सच्चा आनंद चाहिए तो दूसरे को सुख दे"

(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

हम अपना ९०% प्रतिशत जगत को देते है। १०% समय भगवान को देते है। भगवान को तो कुछ चाहिए ही नही, भगवान विना स्वार्थ के अपने उपर 'कृपा' करते है। इस संसार में बिना स्वार्थ के कुछ नही होता है। कार्य करने से पहले लोग विचार करते है। इसमें मेरा क्या है ? नही तो मुझे क्या। कुछ स्वार्थ तो मनुष्य का होता ही है। दान करने में भी स्वार्थ रखता है कि मुझे पुण्य मिलेगा या कीर्ति यश प्राप्त होगा ऐशा होता है। मृत्यु नजदीक आयेगी तो कुछ फल मिलेगा। क्योकि में स्वार्थ होता है। तब आनंद प्राप्त होता है। इस आनंद को जीव अपना लक्ष्य मान लेता है। फिर भी तृप्ति नही मिलती है। सच्चा आनंद इस जगत में नही है। यह संसार हम लोगो के लिये विनाशी है। विनाशी वस्तु से सुख कैसे मिल सकता है। अविनाशी बनना पडेगा। हम सभी परमात्मा के अंश है। परमात्मा अंशी है। उनसे मिल के पूर्म हम हो सकते है। आनंद प्राप्त करना मानव का स्वभाव है। इसमें कुछ गलत नही है। सच्चा आनंद हम इस संसार में खोज रहे है। इस लिये तृप्ति नही मिलती है। हम कही पर जाते है तो दो चार दिन के बाद डर आने की ईच्छा हो जाती है। घर आने पर अच्छा लगता है। हम कितने भी अच्छे स्थान पर गये हो। घर की याद तो आती ही है। यह जगत का घर है। सत्य घर भगवान का है। आत्मा का परमात्मा से सच्चा मिलन अपना लक्ष्य होना चाहिए। हम सभी को सभी लोग याद आते है। सत्संग में आकर शीघ्रता करते है। क्योकि चौरासी लाख घुम कर आये है। कभी ऐसा लगता है। कि भगवान की इतनी करुणा है। तो सजा क्यो करते हे। सजा करनी पडती है। सजा नही देने पर जीव स्वछंद हो जाता है। ऐसी सजा मिलने पर हमे लगता प्रभु दयानिधि है। करुणा सागर है। कृपा निधान है। तो जो मेरी भूल है। तो क्षमा क्या नही करते है। यह संसार की व्यवस्था है। कि अपराध की सजा तो मिलती है। न्याय के लिये वकील, न्यायाधीश, कोर्ट होता है। यदि सजा नही दी जाये तो संसार की व्यवस्था खराब हो जायेगी। मनुष्य को अपराध से डर नही लगेगा। मनुष्य अपने ईच्छा से जीवन जीने लगेगा। इस लिये अपराधी को सजा दी जाती है। भगवान भी इस लिये लोगो को सजा देते है। जीव स्वछंदी नही हो सके। हम घर से बाहर जाते है तो माता-पिता को चिंता लगी रहती है। मन में यही रहता है कि बच्चा सुरक्षित वापस आये। उसे कही पर कष्ट नही मिले। उससे कोई कार्य खराब न हो। माता-पिता सभी व्यवस्था करते है। सब कुछ सिखाते भी है। अपराध की सजा भी देते है। उसी प्रकार भगवान भी अपने माता-पिता है। भगवान को भी ऐसा लगता है कि जीव भटके बिना हमारे पास आये। सत्संग में भगवान अधिक सीखाते है। कभी दर्शन करते समय खराब बात याद आ जाती है। इस तरह विचलित नही होना चाहिए। उसे भगवान की दया, कृपा समझे। महाराज सुधरने का अवसर देते है। आप को भगवान दोष बताते है। संकेत देते है कि सुधर जाये। यह अन्तःकरण शुद्ध होने पर होता है। मन शुद्ध रखकर भगवान से जुडे रहे। कथा-कीर्तन-सत्संग से अपना अन्तःकरण शुद्ध होता है तो यह जीवन में उपयोगी होगा। उदाहरण स्वरुप हम पात्र मे दूध भरे तो पात्र को साफ रखना पडता है। नही तो दूध फट जाता है। यह उपयोग मे नही आ सता है। इसी प्रकार अपना अन्तःकरण शुद्ध

नही होने पर कितना भी ज्ञान ग्राहण करे । वह उपयोगी नही बनता है । यदि सच्चा आनंद प्राप्त हो तो दूसरी चीज यह है कि 'निःस्वार्थ भाव से सेवा करना' अपने माता-पिता से जो संस्कार सीखते है । उसी प्रकार भगवान से एक वस्तु सिखना चाहिए । "अकारण कृपा करे" निःस्वार्थ भाव से करुणा करे । यह भगवान का स्वभाव है । इस लिये हमे भी निःस्वार्थ भाव से सेवा करना चाहिए । केवल एक भावना रखे कि दूसरे के लिये सहायक बने । प्रत्येक व्यक्ति इस संसार मे भगवान का अंश है । सभी की सहायता करे । जिस प्रकार हमारे शरीर में अलग-अलग अंग है । हमे देखे की पैर कभी कहता है कि मेरा काम चलता है । मै क्यो शरीर का वजन उठाऊ ? हम कोई वस्तु हाथ से पकडते है तो नेत्र से देखते है । हाथ कभी कहता है कि इसे आँख ने देखा है । हम किसी की बात कान से सुनते है । काम हाथ करता है या जीभ जबाव देती है । शरी रके अलग-अलग अंग मिलकर काम करते है । एद दूसरे की सहायता करते है । तो ये सभी मानव है । ये भी समाज के अलग-अलग अंग है । सामने वाला सुखी हो, ऐसा निस्वार्थ भाव से सेवा दे । इसमे आनंद आता है । सुख की कामना भूल जाने पर अपने दुख को दूर करने के लिये प्रयत्न अपने आप हो जाता है । सच्चा आनंद चाहिए तो दूसरे को सुख दे । आप सत्संग में आते है तो प्रभाव पडने वाला ही है । उदाहरण में जहर स्वयं पीये या दूसरा कोई पिलाये असर तो पडना ही है । हाजिरी देने आते हो या दूसरे से मिलने आते हो । अपनी प्रगति के लिये आते हो । केवल सत्संग में आने पर भी प्रभाव पडता ही है ।

•

लक्ष्मण झूला

– लाभुबेन मनुभाई पटेल (कुंडाल, ता. कडी)

वर्णीराज आगे चले बद्रीनाथ के प्रवेश द्वार समान लक्ष्मणझूला में आ रहे है । वहाँ लक्ष्मण झूला में एक किनारा है । उसमें लक्ष्मणजी की मूर्ति है । वह मूर्तिमान होकर देखे के हमारे बडे भाई आ रहे है । इसलिये वे मानव रुप घारण करके दण्डवत करने लगे । वर्णीराज उन्हे तुरंत खडे किये । रामावतार मे आप ने हमारी अधिक सेवा की है । बगल में लक्ष्मणजी वर्णीराज को बैठकर पूजा-अर्चन किये । और प्रेम से आलिंगन किये । लक्ष्मणजी वर्णीराज से बोले कई युग वितने के बाद आप से भेट हुई है । वर्णीराजने कहा कि आप गंगा के तट पर तपस्या कर रहे है । हमें तपस्वी अधिक प्रिय है । दर्शन देने आये है । भूमि का भार उतारने के लिये हम ब्राह्मण के घर जन्म लिये है । असुरो के विनाश के लिये । ऋषि-मुनि के सुख के लिये, वनवास चयन किये है । इस प्रकार वार्तालाप करके गंगाजी भोजन खिलाती है । लक्ष्मणजी गंगा जल पिलाते है । आज भी लक्ष्मण झूला में वह किनारा है । जिसमें लक्ष्मणजी की मूर्ति है । और वर्णीराज की मूर्ति विराजमान है । लमण झूला के दर्शन हेतु जाये तो इसे अवश्य देखे ।

लक्ष्मणजी जन्म-जन्म की सेवा की याचना कर रहे है । राम से अधिक लक्ष्मणजी का त्याग है । राम के साथ सीताजी थी । लेकिन उर्मिला को छोडकर लक्ष्मण सच्ची सेवा दिये थे । सेवा के लिये वनवास का चयन किये थे । लक्ष्मणजी यति थे । चौदह वर्ष तक साथ रहे । केवल सीता माँ का चरण देखे थे । ये चौदह वर्ष तक नींद, अन्न, परदृष्टि नारी पर नही किये थे । हनुमानजी यति थे । ब्रह्मानंद स्वामी भी यति थे । ऐसे दृढ व्रत वाले लक्ष्मणजी को देखकर वर्णीराज दर्शन करने पधारे थे ।

•

चोर को चमत्कार दिखाये

– पल्लवीबेन विजयकुमार (लांघणज)

उत्तर गुजरात मे गेरिता एक स्थान है । गेरिता के भक्तो के आग्रह से वशीभूत महाराज गेरिता में विराजे थे । दंढाव्य क्षेत्र के सभी गाँव सुंदर है । प्रसादी के गाँव है । जहाँ-जहाँ श्रीजी महाराज पधारे थे । वहाँ पर स्मारक बना

है । कही पर शिलाये है । कही पर प्रसादी की वस्तुए है । भगवान गेरिता से सायं को निकले यह बात चोरो को पता चल गयी कि स्वामिनारायण गहने पहनकर आ रहे है । उनके साथ बडे-बडे शेठ भी है । चलिये लूट लेते है । और चोर लोग अपने झोली मे भाला, तलवार जैसे घातक हथियार के साथ रास्ते में खडे हो गये थे । रात्रि के प्रथम प्रहर का अंधेरा था। पार्षद बोले, महाराज चोर लोग खडे है । सब के पास घातक हथियार है । हमे तैयार हो जाना चाहिए । महाराजने कहा कि यह अन्जाना क्षेत्रे है । इसमें हमे तथा उन्हे भी चोट लग जायेगी । यह अच्छा नही होगा । महाराज इन लोगो के हमला से संत और आप घायल हो वह अच्छी बात नही है । हमारी जिम्मेदारी क्या है ?

हे महाराज हम लोगो का धर्म आप की रक्षा करना है । संतो की रक्षा करना हमारा धर्म है । पार्षदो को शांत करके प्रभु बोले शांति रखो । आप के धर्म तो सम्भालना आप हमे आगे जाने दो । श्रीजी महाराज पार्षदो से आगे आ गये । बोले आप लोग हमारे साथ आये । कुछ करे तो आप लोग तैयार रहना । संतो को पीछे रखे । संतो के हाथ मे कुछ नही था । केवल पूजा के झोलि थी । हाथ मे माला थी । महाराज आगे बढे । दस हाथ के अन्तर के बाद महाराज ने सिंहनाथ किया ।

''जोई एवा असुर ते वारे, सिंहनाद कीधो तेह वारे
उगामेला शस्स्तर रह्या हाथ, चाल्या वचमां थई नाथ ।।''

श्रीमद् भागवत के साँतवे स्कंध मे भगवान नरसिंहरुप में प्रगट हुए तब सिंहनाद किये थे । इसका वर्णन भागवत में है । सिंहनाद के कारण कई लोग बेहोश हो गये थे । आसुरी स्त्रियो का गर्भपात हो गया था । स्वामिनारायण भगवान के हुए किये गये सिंहनाद से चोर हथियार छोडकर हाथ उपर कर लिये थे । वे लोग पुतले की तरह स्थिर हो गये । श्रीजी महाराजने पार्षदो से कहा हमारे पीछे-पीछे आईये । निर्भय होकर आइये । सभी लोग आगे बढे ! चोरो के सरदारने अपने आदमियो को खूब डॉट लगायी कि मूर्ख तुम लोग कुछ नही कर पाये ।

यह स्वामिनारायण तो चला गया । सरकार क्या करे हमारे हाथ हिल नही रहे थे । तुम लोग वेतन खाकर गद्दारी करते हो । एक चोर सरदार से बोला आप क्या कर किये । आप अपनी ताकत क्यो नही बताये । अंदर-अंदर मे झगडा हो गया । और सरदार को मारपीट दिये । अंदर-अंदर युद्ध करके घायल हो गये । स्वामिनारायण एवम् भक्तो को पकडने वाला था । मारने वाले थे । लूटने वाले थे । श्रीजी महाराज रात को गाँव के सीमा पर रुक गये । दूसरे दिन प्रवास करके उपोषनगर पधारे थे ।

SHREE SWAMINARAYAN TEMPLE - KALUPUR

Information for foregin donation towards Shree Narnarayan Mandir Trust for all Satsangi, who are belongs to abroad (out side India) remit their donation to Shree Narnarayan Mandir Trust, Kalupur, Ahmedabad. Only in Our FCRA A/c. Details as under.

BANK NAME	:	**STATE BANK OF INDIA**
BRANCH	:	**FCRA CELL, MAIN BRANCH, SANSAD MARG, NEW DELHI-110001**
BENEFICIARY NAME	:	**SHREE NARNARAYAN MANDIR TRUST**
SAVING BANK A/C. NO.	:	**401 890 15898**
IFS CODE	:	**SBIN0000691**
SWIFT CODE	:	**SBININBB104**
BENEFICIARY ADDREES	:	**SHREE SWAMINARAYAN TEMPLE, KALUPUR, AHMEDABAD, GUJARAT, INDIA**

Special instruction for remittance made through NRE Cheque in Indian Rs.-

If any donation route from abroad to NRE A/c in India (of Donor), please donate with your cheque along with copy of passport of related donor, Only afterwards their donation will be credited in above mentioned A/c only.

श्री स्वामिनारायण समैयो

के उपलक्ष्य में

रक्षाबंधन श्रावण सुद-१५ अहमदाबाद मंदिर में सत्संग सभा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री एवम् पूरे धर्म के आशीर्वाद से कालुपुर मंदिर के पू. महंत स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी के अच्छे प्रबन्ध से परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के सानिध्य में प्रसादी के सभा मंडप में प्रति पूनम को प्रातः ८-३० से १०-३० तक धर्मकुल की छाया में सत्संग सभा का सुंदर आयोजन होता है । गाँव-गाँव से कथा प्रेमी हरिभक्त कथा श्रवण करने का लाभ लेते है ।

इस सभा में साधु दिव्यस्वरुपदाजी गुरु महंत स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी ने कथामृत पान कराया था । अन्त में धर्मकुल का आशीर्वाद मिला था । सभा का संचालन स.गु.शा. स्वामी नारायणमुनिदाजी (कोठारी स्वामी कालुपुर)ने किया था । हजारो भाविक भक्त अंत में श्री नरनारायणदेव की राजभोग आरती का दर्शन करके प्रसाद लिये थे । इस समैया के अवसर पर नीम के पौधे को हरिभक्तो को आचार्यश्री अपने करकमलो से दिये थे ।(कोठारी स्वामी - कालुपुर मंदिर)

"समैयो" के अवसर पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के करकमलो द्वार नीम के पौधे के साथ कुंडेका वितरण

श्रीजी महाराज के समय में २०० वर्ष पहले महाराज गाँव-गाँव मे वृक्ष लगवाते थे । उस समय वाहन तथा टेकनोलाजी कम थी । सडके नही थी । पैदल चलकर जाना पडता था । गर्मी के समय अनेक जंगल हरे-भरे रहते थे । लोग नीम के वृक्ष के नीचे बैठकर आराम करते थे । नीम तो स्वास्थ्य लाभ देनेवाला वृक्ष है । आयुर्वेदिक दवा में प्रायः प्रयोग की जाती है । अपने सम्प्रदाय में चैत्र मास के प्रारम्भ मे नीम का रस पीने के लिये । व्रतोत्सव निर्णय में लिखा गया है । ठाकुरजी को आठ दिन तक उससे रस बनाकर रोज 'उथापन के समय' ठाकुरजी को रखा जाता है । आठ दिन जो नीम का रस पीते है । उसे वर्ष भर बुखार नही आता है । ऐसा आयुर्वेद मे कहा जाता है । अपना पूरा धर्मकुल पर्यावरण को मानता है । आप देख सकते है । स्वामिनारायण बाग मेमनगर, स्वामिनारायण म्यूजियम आदि पर वृक्ष लगे है । ऐसे शुभ उद्देश्य से प.पू. महाराजश्रीने सभी को नीम का पेड देकर रक्षण हेतु आग्रह भी किये है ।

समैया के अवसर पर प.पू. आचार्य महाराजश्री के करकमलो द्वारा तुलसी के कुंडे का वितरण

तुलसी का नाम आते ही सबके मन में पूज्य भावना आ जाती है । तुलसी के वृक्ष को भगवान कृष्ण का रुप माना जाता है । तुलसी मे देवी लक्ष्मी का वास है । यह तुलसी माता का धार्मिक महत्व है । तुलसी का वृक्ष प्रत्येक हिन्दू के घर में रहे । उसे प्रातः एवम् शायं तांबे के पात्र से जल तथा घी का दीपक करना चाहिए । कार्तिक मास के सुद पक्ष में तुलसी विवाह का अति महत्व है । रोज तुलसी के पत्ते को खाने से स्वास्थ्य अच्छा रहता है ।

ठाकुरजी को तुलसी के पत्ते का भोग लगाया जाता है । तुलसी से अवसाद कम होता है। ताव, सर्दी, खाँसी मे पत्ते को उबालकर पिया जाता है । ऐसे अलौकिक तुलसी माता का वृक्ष धर्मकुल के कमलो द्वारा हरिभक्तो को दिया गया था । सभी हरिभक्त इसे पवित्रता से पालन करे ।

समैयो के अवसर पर प्रसादम् का वितरण

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री एवम् पूरे धर्म के आशीर्वाद से तथा स.गु. महंत शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी के अच्छे मार्गदर्शन से अपने आने वाले महोत्सव शिक्षापत्री के २०० वर्ष समैया के अवसर पर ता. २३-१-२०२६ तक अहमदाबाद शहर के अस्पताल, आनाथ आश्रम जहाँ पर

अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव देश के शिखरबद्ध और हरिमंदिरो मे २१२ मिनीट की महामंत्र

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से अपना आगामी महामहोत्सव ''समैयो'' के उपलक्ष में धार्मिक-सामाजिक अनेक प्रवृतिओ चल रही है । हरिभक्तो में बहुत उत्साह और जोम ''समैयो'' उजवने के लीये दीखाई दे रहा है । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने भगवान के भजन हो एसा शुभ हेतु से आज्ञा की है के ''समैयो'' के उपलक्ष में सब छोटा-बडा गाँव में शिखरबध्ध और हरिमंदिरो में २१२ मिनीट की महामंत्र धून का आयोजन हो और नजदीक में मंदिर में रहते संतो को धून में पधारना है ।

श्रमजीवी भूखे मनुष्य दिखाई देगे । उनकी भूख शांत करने के लिये । अच्छे उद्देश्य से अपने श्री नरनारायणदेव देश अहमदाबाद के शिखरबद्ध मंदिरो से प्रतिदिन तैयार भोजन २१२ पैकेट में सुबह-शाम वितरित किया जायेगा । जो शिक्षापत्री के समैया तक चालु रहेगा । स्वामिनारायण बाग से प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री द्वारा मेमनगर हनुमानजी का मंदिर भोजन बनाकर दिया जाता है।

अपने आराध्यदेव भगवान श्री स्वामिनारायण कितने दयालु है । इस पद में दिखाई देता है । स्वभाव स्वामी का है । पर दुखहारी रे, वारी वहु नामीनो, कोईने दुखियो देखी न खमाय दया आणी रे, दयालु है । अन्न, धन, वस्त्र, देकर दुख टाळते है । करुणा दृष्टि कते है । जैसे भगवान वैसे उनके पुत्र है। इस लिये प्रसादम् की शुरुआरत किये है।

अहमदाबाद मंदिर में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का उत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के परम सानिध्य में २१२ घंटे की २१२ गाँवो में अखंड महामंत्र धून का प्रभाव पडा । रात में श्रीकृष्ण जन्मोत्सव भव्यता से मनाया गया । हजारो भक्त धुन के साथ चौक में गरबा किये थे । रात को १२ बजे श्रीकृष्ण जन्म की आरती भव्य रुप से की गयी । श्री नरनारायणदेव ओच्छव मंडल नंद संतो द्वारा रचित पदो को गाकर जन्मोत्सव मनाये थे । सभी हरिभक्तो को पंजीरी का प्रसाद वितरित किया गया था । (कोठारी स्वामी - कालुपुर मंदिर)

शिक्षापत्री लेखन के २०० वर्ष के "समैयो" के अवसर पर कालुपुर मंदिर में बालको-युवको की शिक्षापत्री वक्तृत्व प्रतियोगिता

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा तथा अनपे भावि आचार्य प.पू. १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की प्रेरणा- आशीर्वाद से स.गु. महंत शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी के अच्छे प्रबन्ध से अपना आगामी महामहोत्सव समैयो के अवसर पर बालक-युवक मूल सम्प्रदाय के नींव की जानकारी प्राप्त करे । ऐसे शुभ उद्देश्य से शिक्षापत्री मे से पाठ श्लोक मुख से करे । ऐसे सुंदर प्रयास से अहमदाबाद शहर की शिक्षापत्री प्रश्नोतरी वक्तृत्व प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था ।

ता. १६-११-२०२५ रविवार : श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर प्रसादी के सभा मंडप में प्रात ८ बजे से प्रारम्भ होगा । सभी स्पर्धक समय से आकर स्थान ग्रहण करे।

"समैयो" के अवसर पर नवा वाडज मंदिर में सत्संग सभा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री के आज्ञा-आशीर्वाद से कालुपुर मंदिर के महंत स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी के अच्छे मार्गदर्शन में नवा वाडज श्री स्वामिनारायण मंदिर में सत्संग सभा की गई थी । इस में हरिभक्तो द्वारा श्लोक ७५ से १०० का वांचन पाठ किया गया था ।

स्वा. दिव्यस्वरुपदासजी (गुरु स.गु. महंत शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी शिक्षापत्री के उपरोक्त श्लोक का सरस विवेचन किये थे । यहाँ के हरिभक्त सुंदर हिंडोला बनाये थे । उसका उद्घाटन करके पू. महंत शा. स्वा. पुरुषोत्तमप्रकासदासजी (कालुपुर) ने आरती उताकर हरिभक्तो आशीर्वाद दिये थे ।(कोठारीश्री - नवावाडज)

"समैयो" के अवसर पर जामपलवाडी शिक्षापत्री भाष्य कथा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से अहमदाबाद मंदिर के महंत स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी के मार्गदर्शन में जामफलवाडी मंदिर में ता. ६ से ९ अगस्त २०२५ तक समैयो के उपलक्ष्य में स्वा. दिव्यस्वरुपदासजी शिक्षापत्री भाष्य की कथा हरिभक्तो को बताये थे । हरिभक्त खुश हुए । (कोठारीश्री - जामफलवाडी)

बिलोदरा मंदिर में "समैयो" के अवसर पर भव्य हिंडोला-सत्संग सबा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा तथा पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा महंत स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी के मार्गदर्शन में उनके शिष्य दिव्यस्वरुपदासजी की प्रेरणा से बिलोदरा गाँव में समैया के अवसर पर ठाकुरजी के समक्ष भव्य हिंडोला प्रदर्शन और सुंदर सत्संग सभा रखी गयी थी । इसमें अधिक हरिभक्तो ने लाभ लिया था ।(कोठारीश्री - बिलोदरा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर एप्रोच (बापुनगर) में हिंडोला उत्सव थता श्रीमद् भागवत कथा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीके आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से यहाँ के महंत स.गु. शा. स्वामी दिव्यप्रकाशदासजी की प्रेरणा से अषाढ-श्रावम मास का

हिंडोला उत्सव में शिक्षापत्री पर्यावरण के सुवाक्यो तथा उसके अनुरुप पेन्टिंग से सुशोभित किये मंडल में सेवा भावी हरिभक्तो के सहयोग से महिला मंडल की बहने नित-नवीन अनेक कलतात्मक हिंडोला का सर्जन करके ठाकरुजी को झूलाया गया था। दर्शनार्थियो के लिये प.पू. बड़े महाराजश्री के आवाज में शिक्षापत्री के श्लको का आडियो श्रवण तथा संगण के स्कीन विडियो से दर्शन हो सके। तथा पुष्पो से शिक्षापत्री का पूजन हो सके।ऐसी सुंदर व्यवस्ता की गयी थी।

श्रावण मास में विशेष नित्य देड घंटे तका पू. महंत स्वामी तथा उनके शिष्य साधु भक्तिप्रसादासजी के वक्ता पद से श्रीमद् भागवत कथा का सुंदर आयोजन किया गया है। पूर्णाहुति के अवसर पर प्रसंगोचित सभा तता समैयो के अवसर पर विशेषक शिक्षापत्री की सत्संग सभा की गयी थी।

जन्माष्टमी के उत्सव में नवा निकोल के युवको द्वारा कीर्तन भक्ति के साथ भक्तजनो द्वारा रासोत्सव तथा बाल मंडल द्वारा अडिंसा और मांसाहार निषेध पर नाट्य मंचन किया गया था। महंत स्वामीने नाटक मे भाग लेने वाले बच्चो को प्रोत्साहित किया गया था।

श्री स्वामिनारायण मंदिर कर्मशक्ति पार्क महापूजा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा श्री नरनारायणदेव युवक मंडल तथा सेवा भावि हरभक्तो का आयोजन से ''समैयो'' के अवसर पर ता. १०-८-२०२५ के दिन एक युवक भक्त मुख्य यजमान पद से बालिकायो सहित बाल मंडल के १३० जितने बालको द्वारा निजमंदिर में ठाकुरजी के सानिध्य में बैठकर समूह पूजा पूर्ण किये थे। महापूजा के अंत में प्रसंगोचित सभा में नारायणघाट मंदिर के महंत स.गु.शा. स्वामी सत्यसंकल्पदासजी के शुभ आशीर्वाद द्वारा अपने अमृतवाणी में बाल मंडल के संचालक और बच्चो को प्रोत्साहित किया गया था। यजमान प.भ. कौशक डी. वेकरिया परिवार रहा था।

अषाढ-श्रावण का हिंडला का उत्सव विधिध प्रकार से कलात्मक हिंडोला में ठाकुरजी झूलाया गया था। हिंडोला उत्सव के मंडप की दिवाले शिक्षापत्री के श्लोको तथा उसके अनुरुप चित्र बनाये गये थे।(गोरधनभाई वी. सीतापरा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर आदरज "समैयो" के अवसर पर घर-घर धुन भजन-कीर्जन

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाश्री के आशीर्वाद-प्रेरणा से सम्प्रदाय के महान अन्नकूटधा आदरज गांव में सत्संगीओ का मंडल समैया के अवसर पर आदरज गाँव के २१२ घर जाकर महामंत्र धून कीर्तन भक्ति करके समैया की जानकारी दी थी।(नयनाबेन पटेल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर लालोडाधाम "समैयो" तथा जेतलपुरधाम "दिशताब्दी महोत्सव" के अवसर पर क्रिया-कलाप

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की असीम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से लालोडा (ईडर प्रदेश) धाम के संतो स.गु. कोठारी स्वामी विश्वप्रकाशदासजी पूजारी स्वामी बालकृष्णदासजी की प्रेरणा से यहाँ लालोडा के मंदिर में अपने आगामी ''समैया'' और जेतलपुरधाम द्विशताब्दी महोत्सव'' के उपलक्ष्य में धार्मिक-सामाजिक प्रवृत्तियाँ अच्छे रुप से की गयी थी। ता. ५-८-२०२५ के दिन लालोडा मंदिर से सापावाडा मंदिर अखंड धुन भजन-कीर्तन करके पदयात्रा का आयोजन किया गया था। उसी प्रकार ९-८-२०२२५ के दिन लालोडा मंदिर से टोरडाधाम तक धुन-कीर्तन भजन करते पदयात्रा मे कई हरिभक्तोने भाग लिया था। ता. १६-८-२०२५ श्रीकृष्ण जन्मोत्सव लालोडा मंदिर में उल्लास पूर्वक मनाया गया था। इस में नरनारायणदेव युवक मंडल अच्छा प्रबन्ध किये थे। ता. १९-८-२०२५ को ठाकुरजी के समक्ष खारेक का अन्नकूट किया गया था। ठाकुरजी को प्रतिदिन नये सजावट के साथ हिंडोला में झूला झूलाया था। प्रत्येक एकादशी को सत्संग सभा की जाती है। प्रति रविवार को बाल सभा तथा बालिका सभा की जाती है। बच्चो को खेल के साथ मूल संप्रदाय का ज्ञान दिया जाता है।(शा.स्वा. प्रेमप्रकाशदासजी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कोटेश्वर में घर-घर समैया के लिये भजन भक्ति

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाश्री के आशीर्वाद से कोटेश्वर मंदिर के महिला मंडल की बहनोने अपने आगामी ''समैयो'' के अवसर पर कोटेश्वर गाँव के आस-पास क्षेत्र से २१२ घर जाकर शिक्षापत्री श्लोक का वाचन करके आचार्य समझकर सभी को शिक्षापत्री देकर हरिभक्तो को समैयो की रुपरेखा समझायी थी।(नयनाबेन पटेल)

समैया के अवसर पर अंबाजी पदयात्रिको के लिये सेवा कैम्प

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आशीर्वाद तथा भावि आचार्य प.पू. १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा स.गु. महंत शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकासदासजी (कालुपुर) की प्रेरणा से तथा स.गु. महंत स्वामी देवप्रकाशदासजी (उनावा) तथा उनावा, बालवा देश तथा समस्त समाज के प्रबंध से शिक्षापत्री लेखन के २०० वर्ष की ''समायो'' के अवसर पर ता. २९-८-२०२५ से ता. २-९-२०२५ तक अंबाजी पदयात्रियो के लिये उनावा गांव में सेवा कैम्प की अच्छी व्यवस्था की गयी है।

श्री स्वामिनारायण मंदिर गांधीनगर से-२ द्वारा "समैयो" के अवसर पर क्रिया कलाप

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से स.गु. महंत शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (कालुपुर-से-२) के अच्छे मार्गदर्शन तथा कोठारी स्वामी भक्तिजिवनदासजीने अच्छे आयोजन से श्री स्वामिनारायण मंदिर से-२ मे अपना आनेवाले समैया के अवसर पर संत-हरिभक्तो द्वारा की गयी कार्यवाही ता. २४-६-२०२५ से ७-७-२०२५ के मध्ये २१२ श्रमजीवीयो को भोजन तैयार करके टिफिन दी जाती थी। इसमें कई हरिभक्त सेवा दिये थे। यहाँ के मंदिर में ता. १२-७-२०२५ से १०-८-२०२५ तक कलात्मक हिंडोला बनाकर श्रीहरि को झूलाया गया था। ता. २५-७ से २५-८ तक श्रावण मास में सिद्धेश्वर महादेव की पूजा-अर्चना, ता. ३-८ को मंदिर में महापूजा ता. १७-८ से २३-८ तक दशम स्कंध की कथा की गयी थी। ता. १८-७ के दिन दोपहर में २ से ४ बजे तक विहार गाँव की सांख्ययोगी बहनो द्वारा सत्संग सभा की गयी। ता. ३१-७ के दिन मेडा गाँव की सांख्ययोगी बहनो द्वारा सत्संग सभा की गयी। ता. २२-८ को विहार गाँव की सांख्ययोगी बहनो ने सत्संग सभा की थी। १५-८-२५ के दिन प्रातः ६ से शायं ६ बजे तक महिला मंडल की बहनो और भाई महामंत्र की १२ घंटे धून किये थे। २३-८ के दिन श्रावण मास की पूर्णाहुति पर १००० दीपक जलाकर ॐनमः शिवाय का २ घंटे तक बहनोने धुन किया था। यहाँ के सिनियर सीटीजन मंडल श्री नरनारायणदेव युवक मंडल तथा महिला मंडल ने अच्छी सेवा दी थी। अहमदाबाद मंदिर से महंत स्वामी लगातार प्रेरणा देते थे। (कोठारीश्री से-२ मंदिर)

मारुसणा मंदिर में "समैयो" के अवसर पर २१२ घंटे की धुन

श्री नरनारायणदेव श्री स्वामिनारायण मंदिर मारुसणा में अपने आने वाले समैया के अवसर पर स.गु. महंत स्वामी सत्यसंकल्पदासजी (धोलका) की प्रेरणा से मारुसणा मंदिर में २१२ घंटे का श्री स्वामिनारायण महामंत्र धुन हरिभक्तोने किया था।

मूली प्रदेश सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर हलवद (टावरवाले) समैया के अवसर पर नवधाम दर्शन

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से (टावरवाले) श्री स्वामिनारायण मंदिर के स.गु. शास्त्री स्वामी भक्तिनंदनदासजी और संत मंडल द्वारा अपने आगामी महामहोत्सव ''समैयो'' के अवसर पर ३०० हरिभक्त के साथ श्रीहरि द्वारा प्रतिष्ठित ९ धामो के देव दर्शन कराके सभी हरिभक्तो को समैया के बारे में समझाया गया था। लगातार तीन दिन तक यात्रा का आयोजन किया गया था। (प्रति. अनिल दूधरेजीया)

अहमदाबाद देश के भाई एवम् बहनो को श्री स्वामिनारायण मंदिर ने पुस्तक भेट

समस्त बहनो के गुरु प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादिवालाश्री के आज्ञा एवम् प्रेरणआ से अहमदाबाद देश के प्रत्येक बहनो के मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर द्वारा प्रकाशित **"भगवान श्री स्वामिनारायण अनन्य आश्रित भक्तो"** नाम की पुस्तक भेट की जायेगी।

भेट प्राप्त करने का स्थान

कोठार कार्यालय : श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर

श्री सुरेशभाई, हार्दिक पुरोहित

सत्संग समाचार

महेसाणा श्री स्वामिनारायण मंदिर में ज्ञानसत्र-१, श्रावण मास शिव पूजन, होमात्मक लधुरुद्र, समैयो, और जेतलपुर द्विशताब्दी के अवसर पर सभा और धुन

परमकृपाळु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा पू. स.गु. महंत शास्त्री स्वामी आत्मप्रकाशदासजी, पू. स.गु. महंत शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से महेसाणा, नारायणपुरा मंदिर के महंत स्वामी स.गु. विश्वप्रकाशदासजी, महंत स्वामी स.गु. नारायणप्रसाददासजी के मार्गदर्शन में पवित्र श्रावण मास में श्रीहरि शिक्षापत्री की गई आज्ञा अनुसार कथा-वार्ता का श्रवण करना। इसी प्रकार मेहसाणा मंदिर में ज्ञान सत्र-१ ता. १७-८-२०२५ से २३-८-२०२५ तक श्रीमद् भगावत दशम स्कंध सप्ताह पारायण का प्रबंध किया गया था। जिस के वक्ता पद पर स.गु. महंत शास्त्री स्वामी देवस्वरुपदासजी (जयपुर) विराजकर कथामृत का रसपान कराये थे।

इसके बाद पवित्र श्रावण मास में विशेष सत्संग के लिये मेहसाणा देश के गाँवो के मंदिरो में मेहसाणा मंदिर के स.गु. महंत महंत स्वामी विश्वप्रकाशदासजी अच्छे प्रबन्ध से १७-८-२५ से २३-८-२५ तक जयपुर मंदिर के महंत स.गु. शास्त्री स्वामी देवस्वरुपदासजी रात्रि को ८ से १०-३० बजे तक निम्नलिखित गाँवो के मंदिरो मे कथा-वार्ता का लाभ दिये थे।

(१) करशनपुरा (२) मोटप (३) आदिवाडा (४) देलमाल (५) वेणपुरा (६) अंबाला (७) धिणोज (८) खेरवा - महेसाणा देश के गांवो में चार्तुमास के अवसर पर कथा-वार्ता की गयी थी।

शिक्षापत्री लेखन के २०० वर्ष की समैया और जेतलपुरधाम मंदिर के २०० वर्ष के अवसर पर मेहसाणा धाम में २५१ घंटे की धुन की गयी थी। और दोनो द्विशताब्दी महोत्सव के अवसर पर मेहसाणा मंदिर में ३० सत्संग सभा की गयी।

समैया के अवसर पर २१२ घंटे की धुन का आयोजन किया गया था। उसमें ता. २२-८-२०२५ रात्रि ९ से १२ बजे तक मेहसाणा देश के गाँवो की पारी थी। इस अवसर पर मेहसाणा मंदिर के महंत स्वामी स.गु. स्वामी विश्वप्रकाशदासजी और महंत स.गु. स्वामी नारायणप्रसाददासजी मेहसाणा, मोटप, करशनपुरा इत्यादि गाँव के हरिभक्त से लेकर कालुपुर मंदिर के प्रसादी मंडप में अखंड धून का लाभ उठाये।

पवित्र श्रावण मास में मेहसाणा धाम मंदिर में विराजमान भगवान श्री भोलेनाथ का पूरा श्रावण मास बेलपत्र, अभिषेक, आरती करके श्रीहरि द्वारा शिक्षापत्री में दी गयी शिक्षा अनुसार ब्राह्मणो द्वारा विशेष पूजन पूरे मास किया गया था। और ता. २२-८-२०२५ के दिन मेहसाणा धाम में भवान भोलेनात के सामने होमात्मक लधुरुद्र यज्ञ किया गया था। जिसके यजमान पद पर प.भ. श्री मुकेशभाई फुलचंददास मोदी परिवार धन्य हुए थे। (हितेन्द्र भगत - महेसाणाधाम)

कांकरिया (रामबाग) मंदिर में समैया के अवसर पर हिंडोला दर्शन

भगवान श्री स्वामिनारायण के चरण कमल से पावन पृथ्वी कांकरिया श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू. आचार्य महाराजश्री के शुभ आज्ञा और आशीर्वाद से कांकरिया महंत शास्त्री स्वामी अभिषेकप्रसाददासजी के मार्गदर्शन अनुसार श्री नरनारायणदेव युवक मंडल और महिला मंडल की बहनोने पूरे मास अनेक प्रकार के हिंडोला सजाकर श्रीहरिकृष्ण महाराज को झूलाना तथा ओच्छव करके हरिभक्तो ने लाभ लेकर धन्यता अनुभव किये थे। (कोठारी स्वामी - कांकरिया)

अहमदाबाद मंदिर में श्री ठाकुरजी का थाल तथा संतवर्णी पार्षदो की रसोई देने वालो की सूची

जेठ सुद-२ प.भ. नारण मूलजी सेंधाणी (नारायणपर-कच्छ), प.भ.अ.नि. विमलाबेन मनुभाई पटेल (सायरा), प.भ.अ.नि. शांताबेन शांतिभाई बालधा (मोटा समढीयाला) । **जेठ सुद-३** प.भ. महेन्द्रभाई महासुखलाल सोनी (अहमदाबाद) । **जेठ सुद-४** प.भ. रतनबेन देवजी गांगजी राबडीया (वाडासर-कच्छ) । **जेठ सुद-५** अ.नि. स.गु. स्वामी श्रीरंगदासजी गुरु स्वा. हरिनारायणदासजी (अहमदाबाद-कालुपुर), अ.नि. स.गु. स्वामी श्रीरंगदासजी गुरु स्वा. हरिनारायणदासजी (सत्संग समाज कुबडथलगाम), प.भ. ध्यान भूपेन्द्रभाई पटेल (कलोल) । **जेठ सुद-६** प.भ. हेत विवेक केराई (अहमदाबाद), प.भ. मुक्ताबेन धनजीभाई पटेल (नवरंगपुरा), प.भ. नीमीबेन एम. कपोपुरा (निकोल), प.भ. कार्तिकभाई भावसार (अहमदाबाद), श्री कोर्पोरेशन (अहमदाबाद), अ.नि. पार्षद देवु भगत जयसीयाराम (राणा कंडोरणा), प.भ. प्रदिपभाई मनुभाई पटेल (राजपुर) । **जेठ सुद-७** प.भ. घनश्यामभाई जीवराजभाई जोबनपुत्रा (राजकोट), प.भ. अल्पेश रादडीया (निकोल) । **जेठ सुद-८** प.भ. रमेशसिंह जे. वाघेला (खोडा) । **जेठ सुद-९** प.भ. निलेशकुमार सोमचंदभाई कोटक (अहमदाबाद), प.भ. शांताबेन प्रेमजी भूडीया (सुखपर-कच्छ), प.भ. सुरेन्द्र एन्ड वर्षा जुरानी (मुंबई) । **जेठ सुद-११** प.भ. रामजीभाई जेठालाल वरसाणी (सामत्रा-कच्छ) । **जेठ सुद-१२** प.भ. परितोष निलेशकुमार कोटक (अहमदाबाद), प.भ.अ.नि. जडीबेन नरोतमभाई पटेल (करजीसण), प.भ. प्राप्ति चंद्रकान्तभाई पटेल (राणीप), प.भ. शैलेषभाई भावसार (सरसपुर), प.भ. कांतिभाई ललीताबेन पटेल (मोटेरा), प.भ. आशिष देवेन्द्रभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. अनिलभाई गोकलभाई त्रापसीया (सुरत), प.भ. जगदीशभाई चिमनभाई पटेल (गांधीनगर), प.भ. वसंतभाई नटवरभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. अमृतलाल नटवरलाल पटेल (अहमदाबाद), माणकी टेक्षटाईल्स, प.भ. हरगोविंदभाई झवेरभाई पटेल (थडमलपुरा), प.भ.अ.नि. लक्ष्मीबेन सामजीभाई गोगारी (नडीयाद), प.भ. नटवरभाई सोमचंदभाई मोदी (अहमदाबाद), प.भ. गीताबेन रमेशभाई पटेल (नारणपुरा), प.भ. मिलनकुमार जयंतीलाल पटेल (करजीसण), प.भ. दिपकभाई (गांधीनगर), गोपाल जेट प्रेसर सिस्टम, अ.नि. स.गु. स्वामी श्रीरंगदासजी - ह. प.भ. घनश्यामभाई कानदास पटेल, हवेली महिला मंडल (कालुपुर मंदिर), प.भ. संजयकुमार बाबुलाल सावलीया (अहमदाबाद), प.भ. कालुभाई वीरजीभाई पानसुरीया (राजकोट). **जेठ सुद-१३** प.भ. ध्रुवलकुमार पी. (रनेला), प.भ.अ.नि. महेशभाई भक्तिदास पटेल (राजपुर) । **जेठ सुद-१४** प.भ.अ.नि. आरतीबेन बिपीनभाई (अहमदाबाद) । **जेठ सुद-१५** प.भ. तन्वी निलेशकुमार पटेल (अहमदाबाद), प.भ.अ.नि. नंदुबेन भीखाभाई क्याडा (निकोल), प.भ. अक्षय विष्णुभाई पटेल (डांगरवा), प.भ.अ.नि. वालबाई मावजी पिंडोरीया (मिरजापुर-कच्छ), प.भ. मानव केतन वोरा (अहमदाबाद) ।

जेठ वद-१ प.भ.अ.नि. भीखाभाई कल्याणभाई गेलाणी (सुरत), प.भ.अ.नि. खीमजीभाई विरजी वरसाणी (सामत्रा-कच्छ), प.भ. हेमलताबेन घनश्यामभाई (अहमदाबाद) । **जेठ वद-२** प.भ. मयुरभाई जयंतीभाई पटेल (पलाणा) । **जेठ वद-३** प.भ.अ.नि. मेहुलभाई बेचरभाई पटेल (धमासणा), प.भ. माणेकलाल सोमनाथ पटेल (बामणवा), अ.नि. स.गु. शा. स्वामी श्रीरंगदासजी (कालुपुर-अहमदाबाद) । **जेठ वद-४** प.भ. चार्मीबेन सुशीलकुमार पटेल (कोठंबा), प.भ. लीलाबेन चंदुभाई जगमालभाई खेर (बलोल-भाल), प.भ. मधुबेन सोमदास पटेल (साणंद), प.भ. गीरीशभाई बारभाया (बेंग्लोर), प.भ.अ.नि. दलसंगभाई चौधरी (भीमपुरा) । **जेठ वद-५** प.भ. अमरतभाई चौधरी (प्रतापपुरा), प.भ.अ.नि. दिलीपभाई गोरधनभाई पटेल (भादरण) । **जेठ वद-६** प.भ.अ.नि. सामबाई मनजी आसाणी (मांडवी-कच्छ) । **जेठ वद-७** प.भ.अ.नि. अश्विनकुमार के. सोनी (अहमदाबाद) । **जेठ वद-८** अ.नि. स.गु. शा. स्वामी श्रीरंगदासजी (कालुपुर) - ह. लसुन्द्रा सत्संग समाज । **जेठ वद-९** प.भ.अ.नि. सामबाई मनजी आसाणी (मांडवी-कच्छ), प.भ.अ.नि. तखीबेन कानाभाई चौधरी (बालवा) । **जेठ वद-१०** प.भ. नित्य सागरभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ.अ.नि. लालभाई केशवलाल पटेल (मुबारकपुरा) । **जेठ वद-११/१२** प.भ. लालजीभाई वल्लभभाई गोधाणी (विरपुर), प.भ. वनुभा शिवुभा वाघेला (गोधावी), प.भ. संजयभाई आर. सोनी (अहमदाबाद), प.भ. शैलेषभाई भावसार (सरसपुर), प.भ. धवल परमानंद पटेल (राणीप), प.भ.अ.नि. कलुजी कानाजी ठाकोर (महेसाणा), प.भ. हरिदर्शनभाई सोनी (अहमदाबाद), प.भ. सोहिलकुमार सुरेशभाई चौधरी (हिंमतपुरा), प.भ. गीताबेन सुरेशभाई शेलडीया (निकोल), प.भ. मेघबाई रामजी वेकरीया (गोडपर-कच्छ), प.भ. खीमजीभाई जेठाभाई मकवाणा (राजकोट) । **जेठ वद-३०** पार्षद बाबु भगत गुरु शंकर भगत (कालुपुर मंदिर), प.भ. हिर सुरेशभाई चौधरी (हिंमतपुरा), प.भ.अ.नि. कानजीभाई ईश्वरभाई चौहाण (करमड) ।

अक्षरनिवासी संतोने भावभीनी श्रध्धाजंलि

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर अमदावाद के संत (लुणावाडा मंदिर में सेवा पूजा करते) स.गु. स्वामी हरिकृष्णदासजी गुरु स.गु. स्वामी मुकुंदजीवनदासजी (उ. ६८ वर्ष) श्रावण वद-३ ता. १२-८-२०२५ के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करते अक्षरनिवासी हुए है।

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर के संत (ईडर मंदिर में सेवा पूजा करते) स.गु. स्वामी उत्तमप्रियदासजी भादरवा सुद-१ ता. २४-८-२०२५ के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करते अक्षरनिवासी हुए है।

Printed and Published by **Shastri Swami Purushottamprakashdasji** on behalf of **Shree Swaminarayan Temple** and **Published From :** Shree Swaminarayan Mandir Kalupur, Ahmedabad-380001. Printed at **Asian Printery**, Near Talati Hall, Raipur, Ahmedabad-380001.
Editor : Shastri Swami Purushottamprakashdasji

अहमदाबाद मंदिर में प्रति पूनम को नियमित सत्संग सभा में दर्शन देते प.पू. आचार्य महाराजश्री ।

अहमदाबाद मंदिर में अपने करकमलो द्वारा संत महादीक्षा देते प.पू. आचार्य महाराजश्री ।

जीवराज पार्क मंदिर के ३७ वे पाटोत्सव के अवसर पर ठाकुरजी की अन्नकूट आरती उतारते प.पू. आचार्य महाराजश्री ।

अहमदाबाद विमान दुर्घटना में मृतप्राय जीवात्माओ के आत्मा के कल्याण हेतु कालुपुर मंदिर में अखंड धून की गयी ।

विसनगर नूतन मंदिर के शिलान्यास के मुहूर्त विधि करते प.पू. आचार्य महाराजश्री ।

श्री कच्छ लेउवा पटेल समाज अहमदाबाद नवजीवन में नया संकुल का उद्घाटन करते प.पू. आचार्य महाराजश्री ।

''समैया'' के उपलक्ष्य में राणीप में आयोजित सत्संग सभा में आशीर्वाद देते प.पू. लालजी महाराजश्री ।

''समैया'' के अवसर पर २१२ दिन तक अपने मंदिरो द्वारा गरीबो को मुक्त भोजन दिया जा रहा है उसका प्रारंभ करते पू. महंत स्वामी और संतगण ।

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at
Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/2024-2026
issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2026

एन.एन.डी. क्रिकेट लीग फाईनल में प.पू. लालजी महाराजश्री की टीम ''टाइटन्'' उस समय कप के साथ प.पू. लालजी महाराजश्री ।

एलनटाउन (आई.एस.एस.ओ. अमेरिका) मंदिर के पाटोत्सव अवसर पर ठाकुरजी का अभिषेक करते प.पू. लालजी महाराजश्री ।

शिवगढ (रापर) कच्छ नूतन मंदिर में मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा विधि करते प.पू. आचार्य महाराजश्री ।

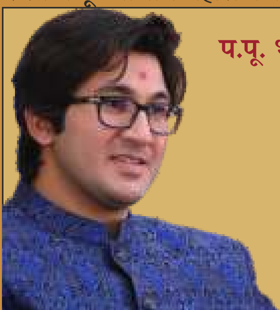

प.पू. भावि आचार्य १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी
महाराजश्री का २८ वाँ
प्राकट्योत्सव

अषाढ वद-१०
ता. २०-७-२०२५
रविवार

श्री स्वामिनारायण मंदिर,अमदावाद

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा से
शिक्षापत्री लेखन २०० वर्ष का
समैयो
23-1-2026 - 27-1-2026

अध्यक्ष : प.पू. भावि आचार्य श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
स्थल :-
''पर्व'' ग्राउन्ड, प्रभा हनुमानजी मंदिर के बागल में,
जमीयतपुरा, अहमदाबाद ।

श्री स्वामिनारायण मंदिर,अमदावाद

विश्व का सर्व प्रथम
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में
समैया के अवसर पर
भव्य हिंडोला प्रदर्शन
ता. १२-७-२५ से २३-८-२५